असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतम्गमय ।

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : ३७ अंक : ९-१०
सितम्बर-अक्टूबर, २०१२
भादो-आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०६९

□
सम्पादक
रमेश थानवी

□
प्रबन्ध संपादक
प्रेम गुप्ता

□
प्रकाशन संपादक
दिलीप शर्मा

□
- एक प्रति पन्द्रह रुपए
- वार्षिक सहयोग राशि एक सौ पचास रुपए
- संस्थाओं के लिए दो सौ पचास रुपए
- व्यक्तिगत सदस्यों के तीन वर्ष का चार सौ रुपए
- संस्थाओं के लिए तीन वर्ष का छः सौ रुपए
- मैत्री समुदाय की सहयोग राशि पन्द्रह सौ रुपए

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
७-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र
जयपुर-३०२ ००४
फोन - २७०७६९८, २७००५५९
फैक्स - ०१४१-२७०७४६४
ई मेल - raeajaipur@indiatimes.com
thanviramesh@gmail.com

क्रम

बोलते पाठक : २
अपनी बात : आखा जीवन शिक्षा के नाम ३

५
प्रणाम : अनिल भाई की याद में

प्रणाम : कहां गया उसे ढूंढ़ो ७
प्रणाम : बोर्दिया जी के साथ सीखा संपादन १०

१२
शताब्दी वर्ष : आंदोलन से शिक्षा

अनुसंधान : प्रो. सेन को सर्वोच्च सम्मान १४
पांच गीत : अवसाद के नाम १६
वाग्धारा : राष्ट्र के अर्थ १९
आंखों देखी : परदेस में पनपता सेवाभाव २२
रपट : कुंज विद्यापीठ २६
शख्सियत : सार्थक जीवन के सौ वर्ष २९
समाचार-परिक्रमा: ३१
पत्रिका : ३२

पाठक अब इंटरनेट पर अनौपचारिका नीचे लिखे लिंक पर ऑन लाइन पढ़ सकते हैं -
http://speakerdeck.com/u/anoupcharika/p/sep-oct-2012
अनौपचारिका के पिछले अंक भी आप नीचे लिखे लिंक पर देख सकते हैं -
http://speakerdeck.com/u/anoupcharika

जयपुर से प्रोफेसर परमदेव शर्मा

समकालीन शिक्षा-चिंतन की पत्रिका, **अनौपचारिका** शिक्षा जगत से जुड़े हर प्रबुद्ध मानस के लिये पठनीय होने के साथ संग्रहणीय भी है। **जुलाई २०१२** अंक के स्थायी स्तंभ **'अपनी बात'** में संपादक जी की अभिव्यक्ति सटीक लगी। यह एक कटु सत्य है कि राज्यों के शिक्षामंत्री शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति गंभीर नहीं होते। उनका एकमेव मंतव्य दलीय हितों की रक्षा करना मात्र ही होता है। देश की भावी पीढ़ी के प्रति उनका चिंतन नगण्य है। इसे विडंबना ही कहूंगा कि आजादी के बाद केन्द्र सरकार में शिक्षा-मंत्रालय हुआ करता था, जो अब मानव-संसाधन मंत्रालय बन कर रह गया है। हमारे नीति नियंता यह भूल चुके हैं कि राष्ट्र के निर्माण की आधार शिला **'शिक्षा'** होती है।

पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा के लेख, **'मां और शांति निकेतन'** पाठ पढ़कर उस दिव्यात्मा के प्रति सिर स्वत: ही झुक गया। **कुसुमवीर** की **'किससे डरते हो'**, काव्य रचना आज की युवा पीढ़ी के लिये प्रेरणास्पद हो सकती है। **सुदेश बत्रा** ने अपने शैक्षणिक अनुभवों के आधार पर आज की शिक्षा प्रणाली एवं व्यवस्था की जो तस्वीर प्रस्तुत की है, उससे असहमत नहीं हुआ जा सकता। **श्याम विमल** की **'पाठक की संवेदना'** शीर्षक प्रस्तुति सारगर्भित लगी। **श्रीमती प्रेम जैन** ने **'स्कूल जाने के लिये'**, कविता के माध्यम से समसायिक शिक्षा-व्यवस्था पर सटीक एवं रोचक कटाक्ष किया है।

यह अंक संगोपांग हृदयंगम करने वाला लगा, एतदर्थ अनौपचारिका परिवार साधुवाद का पात्र है। ❑

पाली से सुलेमान टाक

मेरा अहोभाग्य है कि **शिवरतनजी थानवी** साहब का आज मुझे पत्र मिला - **'शिक्षामंत्री खुद क्या पढ़ते हैं ?'** लेख पर मैंने उन्हें पत्र लिखा था-प्रतिक्रियात्मक नहीं, पाठकीय सुखानूभूति का । उनके पत्र से ज्ञात हुआ-वह लेख आपका है- **शिवरतन थानवी साहब** ने मेरा पत्र आपको री-डायरेक्ट कर दिया था, कितनी महानता है उनकी।

आपने लेख में प्रश्न क्या उठाया कि, शिक्षामंत्रियों के सामने एक आईना ही रख दिया-और आईना कभी झूठ नहीं बोलता। कुछ वर्ष बीत गये आपके कार्यालय में एक संगोष्ठी में आपका सानिध्य मिला था-फिर **वेद व्यासजी** की अध्यक्षता में गठित कमेटी - पाठ्यक्रम भगवाकरण... में आप भी थे और मैं भी। आपने तो एक बैठक में आकर ही किनारा कर लिया था और **व्यासजी** कदमताल करते रहे। ❑

सबको शिक्षा एक समान
मांग रहा है हिन्दुस्तान

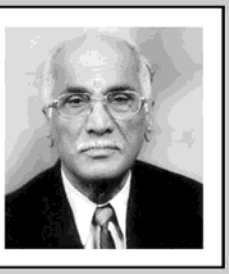

हापुड़ से धर्मपाल अकेला

अनौपचारिका सही समय पर मिलती रहती है, मुझे उसकी सामग्री देखकर सदा ही एक विशेष प्रकार का हताशा-भाव घेर लिया करता है। अत: बहुधा प्राप्ति स्वीकार भी नहीं कर पाता हूं- तत्क्षण अपने को अनौपचारिका के लेखकों की पंगत में बैठने योग्य बनाने हेतु कागज-कलम संभाल लेता हूं, लेकिन फिर लगने लगता है मेरी अपनी क्षमता उस कतार में लेखकों के पीछे खड़े होने वालों के स्तर तक भी नहीं है-फिर भी दुस्साहस कर जाता हूं-एक छोटा आलेख भेजा था, सुब्रह्मण्य भारती के शिक्षा विषयक सरोकार - और आपके मौन के कारण अभी तक आपकी प्रतिक्रिया जानने की बेसब्री बनी हुई है।

सामग्री चयन की आपकी सुदक्षता का मैं कायल हूं-कलम तो आपकी विलक्षण है ही, अभी-गांधी मार्ग में आपकी टिप्पणी देखी-'कबीर का करघा और गांधी का चरखा' यह सचमुच किसी टिप्पणी या प्रशंसा का मोहताज नहीं है। बहुत गहरे सूत्र है दोनों में, इस अद्‌भुत संलयन के लिए प्रशंसा योग्य शब्द मेरे पास नहीं है, माथा ही झुका सकता हूं।❑

आखा जीवन शिक्षा के नाम

इस अंक को कुछ और ही होना था। संपादकीय भी लिखा जा चुका था। मगर हमारी नियति ही कुछ ऐसी थी कि कोई अप्रिय खबर मिलती और हम हठात् उसे स्वीकार लेने को विवश हो जाते। खबर थी कि- **अनिल भाई** नहीं रहे । हम **श्री अनिल बोर्दिया** को **अनिल** भाई कहते थे और अपने सहज स्नेहवश उन्होंने ऐसा अधिकार हमें दे दिया था। वे भाई थे, बड़े भाई, सगे-सरीखे बड़े भाई। कभी उन्होंने कोई दूरी नहीं रखी। व्यवहार में बड़े भाई के नाते सारे धर्म भी निभाये। हर संकट में साथ खड़े रहे। बहुत बार ढाल बन कर संकटों को पास आने से भी रोकते रहे। कोई कल्पना तक नहीं कर सकता कि वे कितने करीब थे। जिस किसी ने उनकी इस करीबी को देखा उसे विश्वास नहीं होता था कि वे सगे भाई नहीं थे। भ्रातृत्व क्या होता है और मैत्री क्या होती है - इसे वे अपने व्यवहार से जीवन भर सिखाते रहे। इसे मैं अपनी किस्मत ही कहूंगा कि उनकी ऐसी आत्मीयता का सौभाग्य मुझे मिल। मैं श्रद्धावनत हूं।

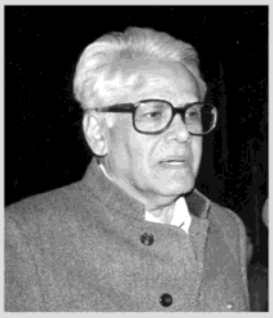

जो भी जब भी **श्री अनिल बोर्दिया** के सम्पर्क में आया उसने यही पाया कि ये सिर्फ और सिर्फ शिक्षा के मार्फत समाज की तस्वीर बदलने के प्रति आस्थावान है। शिक्षा में उनकी जबरदस्त आस्था थी। वे मानते थे कि शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ा कर, शिक्षा को बालकोन्मुखी और साथ ही शिक्षा को बाल-वत्सल बनाकर, लोकोन्मुखी बना कर समाज में एक नया जागरण लाया जा सकता है। वे जानते थे कि समाज जब तक अपनी जड़ता से मुक्ति नहीं पाता है तब तक किसी भी तरह के बदलाव की आशा करना ही व्यर्थ है। वे बदलाव के लिये सामाजिक ढांचे के भीतर जुम्बिश पैदा करना चाहते थे। जुम्बिश बदलाव की ललक के लिये शरीर और समाज में पैदा हुई हरकत का नाम है। जुम्बिश उनका एक प्रिय शब्द था और यही वजह थी कि उन्होंने **लोक-जुम्बिश** नाम की एक व्यापक मुहिम प्रारम्भ कर दी थी। यह मुहिम इस बात का परिचायक थी कि वे न केवल बालकों की सर्वोत्तम शिक्षा के प्रति आस्थावान थे बल्कि साथ ही वे

लोक शिक्षा से लोक जागरण के प्रति भी उतने ही आस्थावान थे। समाज और व्यवस्था के सड़े-गले ढांचे को एक सुचिंतित शैक्षिक-दृष्टि से उखाड़ फेंकना उनका मूल लक्ष्य था। शिक्षा के प्रति ऐसे आस्थावान और इतने अप्रतिम ऊर्जावान व्यक्ति आखी दुनिया में ढूंढ़े से भी नहीं मिलेंगे। यह इस देश का सौभाग्य था कि वे भारत में थे और दुनिया ने उनको पहचानते हुए **'ऐविसेना'** जैसे सर्वोच्च सम्मान से नवाजा और फिर उनको यूनेस्को का **'महात्मा गांधी मैडल'** भी घर बैठे यूनेस्को के निदेशक आकर दे गये। यह अलग बात है कि अनिल भाई **'पद्मभूषण'** थे मगर उनके साथ काम करने वाले जानते हैं कि किसी भी सम्मान का मुलम्मा उन पर नहीं चढ़ा था और वे सदा सर्वदा उतने ही लोक-वत्सल, सहज, सरल एवं निरंकारी थे जितना किसी भी सच्चे लोक-सेवक को होना चाहिए।

शिक्षा के प्रति आस्थावान व्यक्ति शिक्षकों के प्रति भला कैसे आस्थावान नहीं होगा। वे जीवन भर शिक्षकों के प्रति एक आशावान नजर से देखते रहे और हर पल यह कोशिश करते रहे कि समाज में हर शिक्षक को विकास के पूरे अवसर मिलें। ऐसा वेतन मिले जिससे हर शिक्षक सम्मानजनक तरीके से समाज में जिंदा रह सके। आज शिक्षकों के वेतन में जो सम्मानजनक वृद्धि हुई है उसके पीछे अनिल बोर्दिया जी के योगदान को शास्त्री भवन भुला नहीं सकता। वे तब शास्त्री भवन में भारत सरकार के शिक्षा सचिव थे। उससे पहले अतिरिक्त शिक्षा सचिव और उससे पहले संयुक्त सचिव।

हर पद पर रहते हुए उन्होंने हर वर्ष एक नया इतिहास रचा था। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के वे प्रमुख शिल्पी थे। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के भी वे जनक थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को बनाने और संसद से स्वीकृत कराने में भी उनका ही पूरा योगदान था। इस बीच कई तरह के व्यवधान भी आते रहे, संकट भी खड़े हुए मगर सारे संकटों को अपनी अद्‌भुत इच्छाशक्ति, विलक्षण मेधा एवं सम्पूर्ण प्रशासनिक योग्यता से वे दरकिनार करते रहे। पहले कोठारी कमीशन और फिर राममूर्ति कमीशन आदि सभी शिक्षा आयोगों में उन्होंने अपनी दृष्टि संपन्नता के साथ योगदान दिया। एक अद्‌भुत ऊर्जा और अदम्य आशा से वे सदा भरे रहते थे। हर संकट को टाल कर नया कुछ रच देते थे।

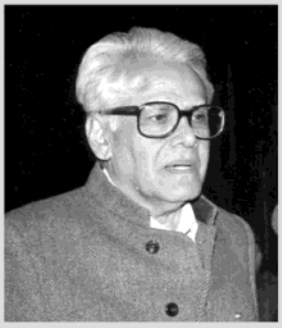

यहां-वहां, जहां-तहां उनके शैक्षिक योगदान के सबूत आज पूरे देश में पग-पग पर बिछे हैं। हजारों शिक्षाकर्मी उनके साथ की याद को अपने सजल नेत्रों में एक गरिमामय मिसाल के रूप में संजोये हुए हैं। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के जनक भी वे ही थे और राजस्थान की अन्य कई संस्थाओं के प्रमुख शिल्पी भी वही थे। संस्था बना लेना एक अलग बात है मगर आखा जीवन हर संस्था को जिंदा रखने और ताजिंदगी उसको सींचते रहना एक विलक्षण बात है। हम सभी उनके इस योगदान के चश्मदीद गवाह हैं और आज एक शून्य में खड़े, अनाथ से बने उनको प्रणाम करते हैं। ❑ **रमेश थानवी**

अनिल भाई की याद में

❑
मिट्ठालाल मेहता

स्व. अनिल भाई, का स्मरण करते ही उनके साथ बिताये समय को हम पुन: जीने लगते हैं। अभी हाल ही की तो बात थी। वे जीते जागते, चलते फिरते हमारी विद्यमानता व अहसास का हिस्सा बने हुए थे। रहनुमा के रूप मे वे हमारी प्रेरणा के स्रोत थे। हम उनके सम्पर्क, सानिध्य व सम्प्रेषण से आलोकित होते थे। अब स्मृति-शेष बन कर वे सामाजिक सरोकार रखने वाले मेरे सरीखे हजारों व्यक्तियों व कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत व सामूहिक सोच का अंश बन गये हैं। सहज स्वभाव, समर्पण सकारात्मक सोच, सखा भाव, उनकी मेधा, उन्मुक्त हंसी, विराट चिन्तन, तथा उच्च श्रेणी की कार्य कुशलता उनके व्यक्तित्व की एक विशेष पहचान थी। वे **नेल्सन मंडेला** सरीखे व्यक्ति से लेकर गांव के आम आदमी से अत्यन्त ही सहज भाव से मिल सकते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित चर्चाओं व अंतराष्ट्रीय गोष्ठियों के विचार-विमर्श में एक सरीखी गंभीरता व मनोयोग से भाग लेते थे। वे कार्यकत्ताओं में कार्यकर्ता, अफसरों में अफसर तथा उस्तादों में उस्ताद के रूप में जाने जाते थे। उनकी मित्रता व अपनेपन के अहसास से हम सब गौरव एवं रोमांच का अनुभव करते है।

शिक्षा व सामाजिक विकास को अहर्निश समर्पित अनिल भाई का जन्म वर्ष १९३४ में इंदौर में हुआ। पहले उदयपुर के सुरम्य वातावरण में विद्याभवन व एमबी कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की। फिर देहली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेन्स कॉलेज ने उनकी व्यक्तित्व को तराशा। १९५७ में भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रवेश किया। शिक्षा और समाज परिवर्तन के चोलीदामन के रिश्ते को समझकर उन्होंने पूरा जीवन ही शिक्षा को समर्पित कर दिया। राजस्थान व केन्द्र के शिक्षा विभाग व मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सर्वोच्च पदों को सुशोभित किया। लीक से हटकर अपनी ऊर्जा व मेधा का उपयोग वंचित वर्ग के लिये शिक्षा को सहजगम्य बनाने में किया। शिक्षा को अर्थपूर्ण बनाने के लिये वे जीवनपर्यन्त नये नये कार्यक्रम रचते रहे तथा उनकी क्रियान्विति के लिये संगठन बनाते रहे। उनकी उर्जा, दिवा स्वप्न व बहुआयामी सोच से **महिला विकास, महिला सामाख्या, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, लोक जुम्बिश, दूसरा**

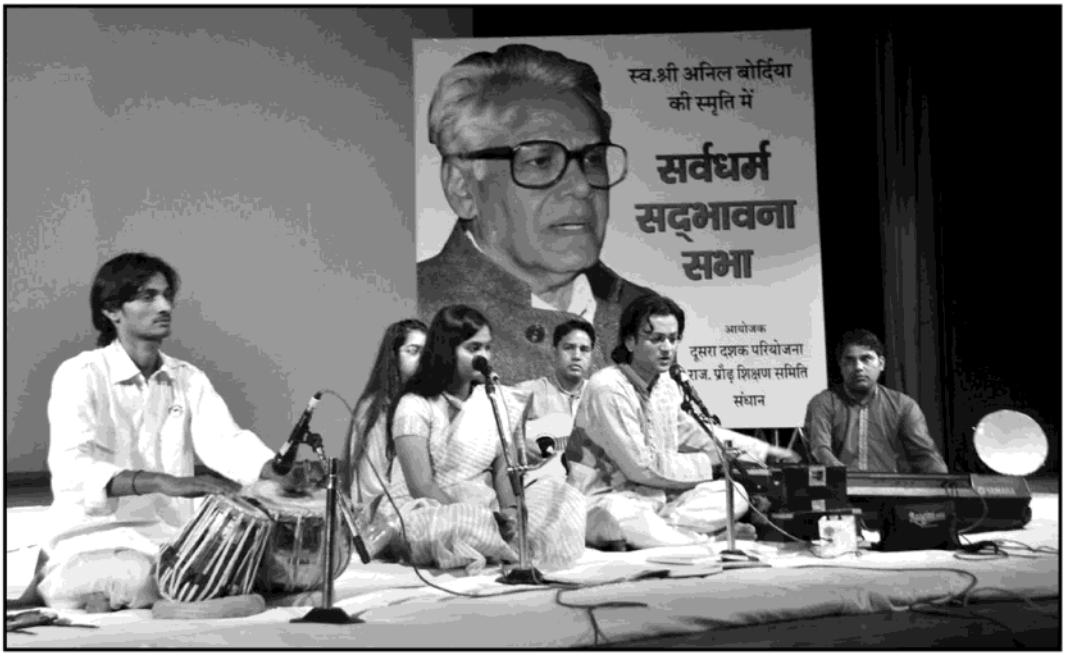

दशक जैसी कई योजनाओं का जन्म हुआ। इनको मूर्त रूप देने के लिये **राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, नवोदय विद्यालय, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, संधान, लोक जुम्बिश, दूसरा दशक** आदि कई संगठन बनाये गये।

शिक्षा से वंचित व्यक्तियों तक पहुंचने के लिये वे जिन्दगी भर प्रयोग करते रहे। राजस्थान में शिक्षाकर्मी, लोक जुम्बिश व दूसरा दशक सरीखी प्रयोगधर्मी योजनाओं में उनके चिन्तन की परिणति हुई।

अपनी आभा से उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को आलोकित किया। जोमतियेन में आयोजित सबके लिये शिक्षा के लिये अंतर्राष्ट्रीय कान्फरेन्स के तो वे प्रणेता ही थे। उन्हीं के अथक प्रयास से सब देशों में सबको शिक्षा सुलभ कराने की सहमति बनी तथा तत्सम्बन्धी प्रस्ताव पारित हुआ। यूनेस्को द्वारा अप्रेल, २००० में आयोजित डकार कॉन्फरेन्स में भी उनका अप्रतिम योगदान रहा था। उन्होंने यूनेस्को की अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पेरिस में पढ़ाया। १९७६ में वे बैंकॉक स्थित एशिया व प्रशान्त क्षेत्र विकास के लिये शिक्षा में नवाचार केन्द्र के फैलो चुने गये। १९९९ में यूनेस्को ने उन्हें शिक्षा में अत्यन्त विशिष्ट योगदान करने के लिये विख्यात **'एविसेना'** स्वर्ण पदक से नवाजा। भारत के राष्ट्रपति ने शिक्षा व सामाजिक विकास क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिये २०१० में **'पद्मभूषण'** पुरस्कार से सम्मानित कर उनके प्रति समूचे राष्ट्र की कृतज्ञता ज्ञापित की।

ऐसे थे हमारे अपने ही खास अनिल भाई। पूरी श्रद्धा व आत्मीय व अकिंचन भाव से उनको शत शत नमन ।❑

५ साईंपथ, केशव विहार
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

अनिल भाई की याद में

कहां गया उसे ढूंढ़ो

❑

शुभू पटवा

आठ सितम्बर, २०१२ भारतीय विद्या भवन, जयपुर का सभागार। एक गरिमामय खामोशी। निस्तब्धता। मंच पर स्व. अनिल बोर्दिया की छवि, ऐसी कि अभी बोल पड़ेंगे। पर, चिर-शांति। एक ओर एक दूसरा पट्ट। लिखा है - 'सर्व धर्म सद्भावना सभा'-बस। मैं निर्निमेष उस छवि को निहारता हूं। प्रणाम की मुद्रा में आता हूं, पर दूसरी ओर से शब्द नहीं फूटते-'कैसे हैं, शुभूजी'- ये ही शब्द हुआ करते थे, उनके। अब यह पूछने वाला कोई नहीं। मैं यथार्थ के अहसास में डूब जाता हूं। अब कोई बोर्दिया किसी आजु-बाजू में आकर नहीं बैठने वाला। सदा ही कहीं पीछे आकर, किसी के ही पास बैठ जाया करते थे।

अब तीन बजा चाहता है। श्रीमती ओतिमा बोर्दिया, उनकी सहगामिनी और कुछ और लोग आते हैं। सधे कदमों से, धीर-गंभीर चालवाली श्रीमती बोर्दिया। चेहरे पर अवसाद तो नहीं, पर गहरा गांभीर्य, ऐसा कि जैसे कई रात न सो पाई हों। अनिल भाई के न होने, कभी न भुलाने वाली इस अनहोनी में वे डूबी सी लगीं। पर, सबको थावस देती सी। सबके संताप को हरती सी, सारे संताप अपने में समो लेती सी। मेरे मन में सहज 'आदर' जग उठता है।

सन् १९६८ याद आता है। वे बीकानेर में जिलाधीश थीं और अनिल भाई शिक्षा निदेशक। अनिल भाई से अधिक उनसे मिलना होता था, कलेक्टर जो थीं। तब अकाल था, बीकानेर में। आये दिन एक-न-एक समस्याओं से घिरा रहता था बीकानेर और घिरी रहती थी कलेक्टर साहिबा। मैं तब २१-२२ साल का जिज्ञासु था। हाथ में कलम तभी से थाम ली थी। नवभारत टाइम्स व एक स्थानीय साप्ताहिक का काम देखता था। इसीलिये कलेक्टर साहिबा से मिलना अधिक होता था और कभी-कभी अरुचिकर स्थितियां भी बन आती थीं।

सन् १९६८ की ही बात है। बीकानेर के 'सार्दूल मल्टीपरपज हायर सैकंडरी

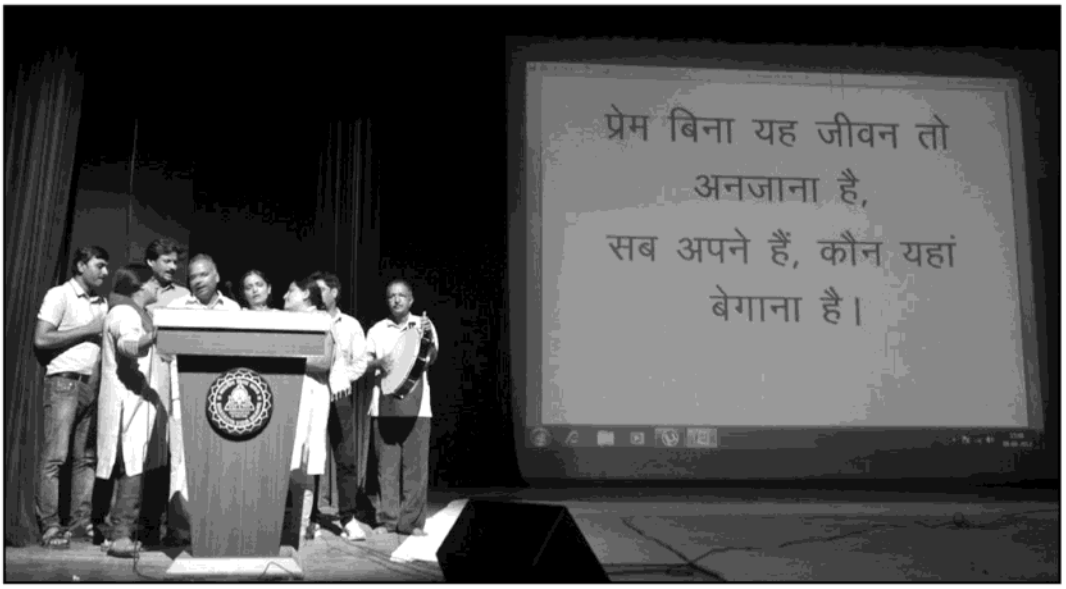

स्कूल' का कार्यक्रम। बोर्दिया दंपत्ति और मैं भी वहां थे। कार्यक्रम शुरु होने में कुछ देर थी। हम कहीं खड़े थे कि अनिल भाई ने मुझे कुछ कहा कि श्रीमती बोर्दिया क्यों मुझ से नाखुश हैं ? श्रीमती बोर्दिया ने इससे इनकार किया और मैंने भी 'देवर' बन अपनी कुछ कैफियत दी। विनोद भरे थे वे क्षण। मुझे वे क्षण याद आने लगे। पर, अब ? अब विनोद के लिए कहां जगह है ? मेरा मस्तक उनके सम्मुख नत हो रहता है। और अब·····।

तभी मुरारी (मुरारीलाल थानवी) कार्यक्रम शुरू कर देते हैं। एक गीत के बाद पटल यंत्र से कुछ चित्र आते हैं। अनिल भाई की छवियां। और, एक गाना चलता है–

बहती हवा सा था वो
उड़ती पतंग सा था वो
कहां गयो उसे ढूंढ़ो...

मैं फिर उनको ढूंढ़ने लगता हूं। फिर श्रीमती बोर्दिया की छवि आंखों के आगे छा जाती है। इस गाने के शब्द विचलित करते हैं। पर, मुझे मालूम है कि वे अविचल हैं। समूचा आलोड़न–विलोड़न अपने में समोये बैठी हैं। सभागार पूरा भरा है। सद्भावना सभा क्रमश: आगे चलती है। श्री एम.एल. मेहता (राज्य के मुख्य सचिव रहे हैं) आते हैं। पूरा परिचय देते हैं। कहते हैं–'... **रहनुमा के रूप में वे हमारी प्रेरणा के स्रोत थे। .... अब स्मृति शेष बनकर सामाजिक सरोकार रखने वाले मेरे सरीखे हजारों व्यक्तियों व कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत व सामूहिक सोच का अंश बन गए हैं।...,**

कार्यक्रम आगे बढ़ता है। पूरे कार्यक्रम की बुनावट में न वृथा औपचारिकता, न रुदन, न विलाप। पर, वह सब जो अनिल भाइ के जीवट व जिजीविषा को द्विगणित करता है।

सचमुच लगा कि मृत्यु पर विजय पा लेने का यह एक 'उत्सव' था। मृत्यु का नहीं, मृत्युंजय का उत्सव। एक मरणोतर जीवन का असली स्मरण। मैंने भी ऐसा ही कुछ कहा। वे मृत्युंजय हो गए, उनकी याद सदा बनी रहेगी।

स्वर्गीय अनिल बोर्दिया उन गिने–चुने लोगों में से एक थे, जो कभी उच्च प्रशासनिक अधिकारी की भूमिका में नजर आते, तो कभी एक कार्यकर्ता, एक सजग **'एक्टीविस्ट'** के रूप में दिखाई देते। एक ओर विश्व ख्याति–प्राप्त **नेल्सन मंडेला** के साथ उनकी करीबी थी, चर्चा–परामर्श होता था। तो ठीक दूसरी ओर किसी गांव में रहने वाली 'धापू दीदी' उनकी बलाइयां लेती दिखाई देतीं और शमीम भाटी या विभा जैसी नवयुवतियों को वे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते नजर आते।

भारत के शिक्षा सचिव के पद तक पहुंचे स्व. अनिल बोर्दिया शिक्षा और शिक्षा के सवालों से ताजिंदगी जूझते रहे। इसलिये कि वे शिक्षा में ही ऐसी क्षमता देखते थे, जो कि व्यक्ति की अस्मिता का रक्षक हो सकता है। इसीलिये शिक्षा के माध्यम से वे **'निर्भय मन और सिर ऊंचा'** जैसा लक्ष्य हासिल करना चाहते थे। ऐसी अनेक संस्थाएं भी उन्होंने स्थापित कीं जो यही लक्ष्य हासिल करना चाहती रही है। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, संधान, दूसरा दशक के वे जनक कहलाए। जनक तो वे जिलों में स्थापित प्रौढ़ शिक्षण समितियों के भी रहे। पर, बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति ऐसा पहला स्वैच्छिक संगठन कहलाया जिसका बिरवा बोर्दियाजी के हाथों पहले–पहल रोपा गया।

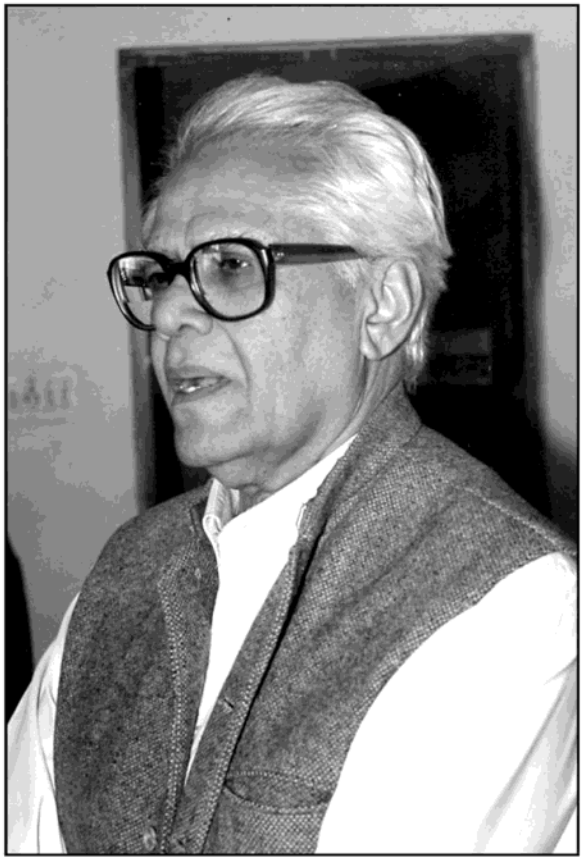

दक्षिण अफ्रिका, बांग्लादेश और नाइजीरिया के शिक्षा सलाहकार रहे स्व. बोर्दिया सन् १९५७ में भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए। अपना अधिकांश समय शिक्षा व विकास के

लिए देने वाले अनिल बोर्दिया ने विभिन्न पदों पर रहते हुए भारत के शिक्षा सचिव के पद से अवकाश ग्रहण किया। इस बीच यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र संघ) की शैक्षिक गतिविधियों से भी जुड़े रहे। पहले यूनेस्को के शिक्षा संस्थान के उपाध्यक्ष (१९७६-१९८२) रहे। फिर सन् १९९० से १९९२ तक जिनेवा में अध्यक्ष रहे। कई अंतरराष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलनों में मुख्य भूमिका निभाने वाले स्व. बोर्दिया राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति के भी जनक थे। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में प्राथमिक शिक्षा के लिए बनी समिति के भी आप अध्यक्ष रहे। **'शिक्षा का अधिकार'** कानून के निर्माण व इसके लिए बनी समिति के भी आप अध्यक्ष थे।

शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रतिष्ठित 'ऐविसेना सम्मान' सन् १९९ में स्व. बोर्दिया को अर्पित हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ का यह पुरस्कार तब तक शासनाध्यक्षों को ही दिया जाता रहा है। पहली बार किसी गैर शासनाध्यक्ष को यह पुरस्कार दिया गया, जो अनिल बोर्दिया को था। एविसेना सम्मान की बात आ गई, तो मुझे याद आ रहा है - जयपुर के रवीन्द्र भवन में हुआ **'आनंदोत्सव'**। यह अनिल भाई के सम्मान में हुआ। राजस्थान भर से और अन्य स्थानों से भी लोग-बाग आए। उस कार्यक्रम का संचालन करते हुए इस लेखक ने निदा फाजली की एक रचना की ये पंक्तियां-'मन बैरागी तन अनुरागी कदम-कदम दुस्वारी है, जीवन जीना सरल न जानो बहुत बड़ी फनकारी है-**दोहराई** थी।' सचमुच अनिल भाई के सामने भी दुस्वारियां कभी कम नहीं हुईं, पर उनका जीवन सच ही 'बहुत बड़ी फनकारी' वाला रहा।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने ही सन् २०१० में **'गांधी सेवा मेडल'** प्रदान किया। यह सम्मान यूनेस्को के निदेशक ने स्वयं अर्पित

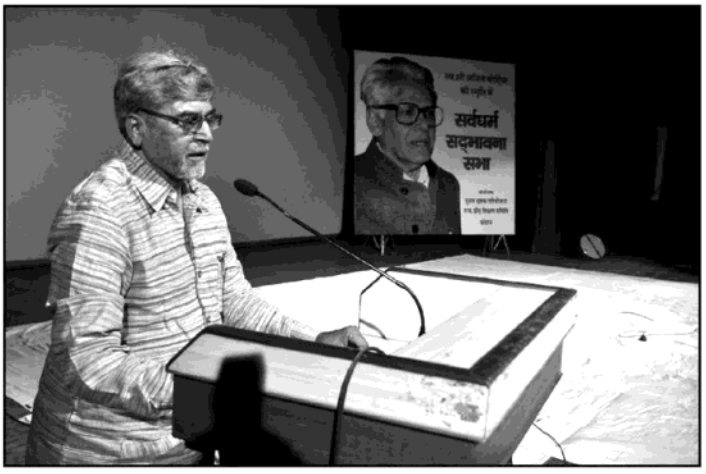

किया। तब बोर्दिया जी बाप पंचायत समिति (फलोदी तहसील, जोधपुर जिला) के एक गांव देगावड़ी की सभा में थे। उन्हें इस **'गांधी सेवा मेडल'** की कोई भनक न थी। २०१० के साल में ही भारत सरकार ने शिक्षा में उनके अप्रतिम योगदान के लिए **'पदम्-भूषण'** सम्मान से अलंकृत किया।

औपचारिक सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद सन् १९९२ में वे राजस्थान में 'लोक जुंबिश' नाम की शिक्षा परियोजना के अध्यक्ष बने। इसके माध्यम से प्राथमिक शिक्षा में जो नवाचार स्व. बोर्दिया ने शुरू किए, वे आज भी याद किए जाते हैं। राजस्थान व भारत सरकार की सहभागिता से चलने वाले इस कार्यक्रम से पृथक हो, सन् २००१ में एक अन्य शिक्षा अभिक्रम 'दूसरा दशक' नाम से शुरू किया जो आज अनवरत गतिमान है और आखिर तक वे इससे जुड़े रहे। 'दूसरा दशक' शिक्षा अभियान में ११ से २० आयु वर्ग के किशोर-किशोरियां व युवाओं को सामाजिक बदलावों में मुख्य भूमिका के लिए तैयार करने का अभिनव प्रयोग इस कार्यक्रम के जरिए हो रहा है। यह शिक्षण-प्रशिक्षण भी लोक-व्यापी बन रहा है और भारत से बाहर भी इसकी सराहना हो रही है।

बच्चों और किशोर-किशोरियों की शिक्षा, कामगरों और स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं के लिए स्वाभिमान का जीवन बसर करने की हिकमत पैदा करने वाले विरले लोगों में वे एक थे। महिला सशक्तिकरण के लिए देश-प्रदेश में उजास फैलाने वाली उनकी अलख कभी न बुझने वाली ऐसी लौ है, जिसकी प्रकाश-रश्मियां आज हम चहुं और देख सकते हैं।

उनका अवसान गहरा आघात है, पर वह टाला नहीं सकता था। विधि के आगे सब असहाय हैं। जो संबल उनसे मिलता रहा है, आंखें उसकी तलाश में है। उनकी पार्थिव देह बेशक हमारे मध्य नहीं है, पर उनका प्रेरक व्यक्तित्व सदा संबल देता रहेगा।

मुझे कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर का यह पद याद आ रहा है -

सांध्य रवि ने कहा मेरा काम लेगा कौन
रह गया सुनकर जगत सारा निरुत्तर मौन
एक माटी के दिए ने नम्रता के साथ
कहा जितना हो सकेगा मैं करूंगा नाथ।

बस। ❑

स्वतंत्र पत्रकार-भीनासर-३३४४०३
बीकानेर (राज.)

बोर्दिया जी के साथ सीखा संपादन

❑

सवाईसिंह शेखावत

राजस्व सेवा में मेरा चयन १९८४ में हुआ। मैं तब विकास विभाग की पत्रिका राजस्थान विकास का संपादक था। मुझे यहां शिक्षा विभाग से प्रतिनियुक्ति पर विकास आयुक्त आदरणीय बोर्दिया लाये थे–बड़े भाई रमेश थानवी की अनुशंषा पर।

मेरा पदस्थापन उस समय कोटपूतली हायर सैकण्डरी में था। विद्यालय में संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन था। उद्घाटन के लिये संयुक्त निदेशक महोदय जयपुर से पधारे।

इस अवसर पर एक स्मारिका का भी विमोचन हुआ। स्मारिका में मेरा संपादकीय 'माण्ट्रियाल ओलम्पिक की शर्म' पढ़कर संयुक्त निदेशक महोदय खासे मुतासिर हुए। मैंने उसमें मॉण्ट्रियाल ओलम्पिक के समापन अवसर पर बी.बी.सी. संवावदाता द्वारा भारतीय खेल प्रभारी से पूछे गये उस चुभते प्रश्न का उल्लेख किया था जिसमें करोड़ों का देश और एक भी पदक नहीं पर गहरा अफसोस जाहिर किया गया था।

संयुक्त निदेशक जी बोले 'क्या यही तिलमिला देने वाला संपादकीय है।' संपादकीय के अंत में छपे नाम को पढ़कर उन्होंने पूछा 'क्या ये वही सवाई सिंह शेखावत तो नहीं हैं जिन्हें अनिल बोर्दिया जी एक अरसे से ढूंढ़ रहे हैं?'

'हैं तो ये सवाई सिंह शेखावत ही जाने–माने कवि लेखक। अब बोर्दिया जी किसे खोज रहे हैं ये तो वही जाने।' प्रिंसिपल साहब ने जवाब दिया।

कवि–लेखक, फिर तो ये वही हैं। आप इन्हें तुरन्त प्रभाव से बोर्दिया जी से मिलने भिजवाएं।

किस्सा कोताह। प्रिंसिपल साहब के आदेशानुसार सचिवालय पहुंचकर बोर्दिया जी से मिला। संक्षिप्त परिचय के बाद बोर्दिया जी ने राजस्थान विकास के संपादन का प्रस्ताव रखा। लेकिन मैंने घर–परिवार की परिस्थितियों के हवाले से एकदम मना कर दिया। इस तरह तुरंत नंगी ना नहीं करनी चाहिये यह शऊर बाद में राजस्व सेवा में आकर ही सीखा। मेरी ना सुनकर बोर्दिया जी कुछ देर मौन रहे। इस तरह के उत्तर की उम्मीद शायद उन्हें नहीं थी। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को खासतौर से ना सुनने का अभ्यास नहीं है। यह भी राजस्व सेवा में ही आकर जाना।

बोर्दिया जी की निगाह उनके बांई ओर रखे फोन के चोगे पर टिकी थी। जाहिर है वे सोचने में मशगूल थे।

अचानक उन्होंने नजरें उठाकर मेरी ओर देखा 'क्या यह आपका अंतिम निर्णय है?' मेरे 'जी' कहने पर वे बोले, 'देखो भई शेखावत जी, तय तो आप को करना है। लेकिन मैं सोचता हूं कि आप हमारे साथ काम करते तो अच्छा होता।'

बोर्दियाजी एक टक मेरी ओर देख रहे थे। उनके चेहरे के संजीदा इसरार ने मुझे पशोपेश में डाल दिया।

लिहाजा मैंने सोचने के लिये कुछ अवसर चाहा।

घर आकर पत्नी से विचार विमर्श किया तो उसने हमेशा कि तरह ठोस सलाह दी: बच्चों की पढ़ाई–लिखाई के हिसाब से भी आपका जयपुर ज्वाइन करना ठीक रहेगा।'

इस तरह ७ जनवरी, १९८४ को मैंने विकास विभाग में कार्य ग्रहण किया। 'राजस्थान विकास' के प्रकाशन की शुरुआत यूं तो १९५० में ही हो गई थी पंचायती राज के शुभारम्भ के साथ ही। लेकिन जनता राज के दौरान वह बन्द हो गया। बोर्दिया जी के प्रयत्नों से उसका पुन: प्रकाशन संभव हुआ।

सूचना एवं जन संपर्क विभाग में सहायक निदेशक भाई लक्ष्मण बोलिया शुरुआत में अकेले ही संपादन का काम देख रहे थे। लेकिन पत्रिका की प्रकाशन अवधि

मासिक होने और काम अधिक होने से मुझे बतौर सहायक संपादक लगाया गया। बाद में बोलिया जी के विभाग में वापस चले जाने पर मुझे अकेले ही सारा काम देखना पड़ा।

राजस्थान विकास के संपादन का काम मेरे लिए नया था। साहित्य लेखन से इतर ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज से संबंधित विभिन्न विषयों के लेखों का संपादन, भाषा, शोधन, प्रूफ-शोधन, संपादकीय लेखन, प्रेस में मुद्रण कार्य का पर्यवेक्षण, डाक विभाग में डिस्पैच की कार्यवाही जैसे सभी काम देखने पड़ते थे।

सचिवालय का माहौल तो कुछ खास रास नहीं आ रहा था, लेकिन लिखने पढ़ने के काम से जुड़ा होने के कारण एक आश्वस्तपन था। फिर बड़े भाई बोलिया जी का स्नेह और मार्गदर्शन तो था ही।

राजस्थान विकास के संपादन से मेरे लेखन का दायरा बढ़ा। गद्य की तमीज को कुछ और सलीके से जाना। लेकिन जयपुर प्रवास की सबसे बड़ी उपलब्धि रही साहित्यिक मित्रों से परिचय और बोर्दियाजी से अन्तरंगता।

राजस्थान विकास में प्रकाशित होने वाले लेख और टिप्पणियों को लेकर बोर्दिया जी बहुत गम्भीर थे। अंक में जाने वाली सामग्री की फाइल उन तक जाती। उनके अवलोकन के बाद ही किसी लेख अथवा टिप्पणी का प्रकाशन संभव था। राजस्थान विकास के स्वरूप निर्धारण में उनका ठोस योगदान था और उनके व्यक्तित्व की छाप हर अंक में देखी जा सकती थी।

पत्रिका के हर अंक में विकास के दर्शन से जुड़ा एक गंभीर आलेख होता था। जिसे लेकर एक प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक ने कहा था कि 'अब तो राजस्थान विकास भी पठनीय और मननीय हो गया है।'

पिछले कवर पृष्ठ पर कविता छपती थी। बोर्दिया जी के निर्देशानुसार उन दिनों उसका दो सौ रुपया मानदेय दिया जाता था। यह वह जमाना था जब अच्छे खासे लेख पर सौ रुपया पारिश्रमिक दिये जाने का दस्तूर था।

पत्रिका में 'विकास आयुक्त की बात' नाम से एक स्थायी स्तंभ था। बोर्दिया जी न केवल वह कॉलम स्वयं लिखते थे, बल्कि प्रूफ के हिज्जे भी खुद दुरस्त करते थे। विकास के किसी समकालीन मुद्दे पर लगभग बोलचाल की सरल सहज भाषा में लिखा गया उनका वह कॉलम अनूठा होता था।

उनके जाने के बाद कितने विकास आयुक्त आये और गये। किसी ने एक हरफ नहीं लिखा। ❑

७/८६, विद्याधर नगर
जयपुर, मोबाईल०९६३६२९८८४६

अहमदाबाद का विश्व प्रसिद्ध गायक युगल विनय एवं चारुल : लोक जागरण की लय

आंदोलन से शिक्षा

❑

डॉ. कश्मीर उप्पल

भवानी भाई की शताब्दी के समारोह देश में कई जगह आयोजित किये जा रहे हैं। अधिसंख्य लोग उनको हिन्दी के समर्थ कवि एवं गीतकार के रूप में जानते हैं। बहुत कम लोगों को पता है कि वे अपनी स्वेच्छा से एक निजी विद्यालय चलाकर अलख जगाने वाले सच्चे शिक्षक थे। महात्माजी के अनुयायी थे यह तो हम जानते हैं मगर उनकी प्रेरणा से शिक्षा को आंदोलन बनाकर गली-गली में अलख जगाने के काम का एक प्रमाणिक संस्मरण यहां प्रस्तुत है । ❑ सं.

प्रसिद्ध कवि एवं विचारक **भवानी प्रसाद मिश्र** के पिताजी पंडित सीताराम मिश्र स्कूली शिक्षा विभाग में विजिटंग इंस्पेक्टर के पद पर थे। पिताजी का स्थानान्तरण होता रहता था। इसलिये उनकी प्राथमिक शिक्षा सोहागपुर, हाई स्कूल की शिक्षा होशंगाबाद और नरसिंहपुर में हुई। जबलपुर के राबर्टसन कॉलेज से उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत से बी.ए. की पढ़ाई पूर्ण की।

स्नातक होने के बाद वे हिन्दी के प्रचार के उद्देश्य से इंडियन, प्रेस प्रयाग की ओर से बड़ौदा गये पर शीघ्र ही लौट आये। छिंदवाड़ा के एक हाई स्कूल में कुछ महीनों तक अध्यापक के रूप में काम किया। इसके बाद वे पिता के पास बैतूल आ गये थे। इस बीच पिता का स्थानान्तरण बैतूल हो गया। वे बैतूल में गोठी परिवार के घर के सामने ही रहते थे। दीपचंद गोठी का परिवार स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा हुआ था। महात्मा गांधी, स्वतंत्रता आंदोलन के कई नेता और कविवर माखनलाल चतुर्वेदी गोठी परिवार के बगीचे में ठहरते थे।

इटारसी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी समीरमल गोठी का जन्म १९२७ में बैतूल में हुआ। वे जब बैतूल में विद्यालय में पढ़ते थे उसी समय **भवानी भाई** भी बैतूल आ गये थे। **समीरमल गोठी** बताते हैं कि उनका घर ठीक हमारे घर के सामने था। वे यह भी बताते हैं कि दोनों परिवारों के बीच घरेलू संबंध थे। इसलिये **भवानी भाई** से प्राय: रोजाना मिलना जुलना होता रहता था। दोनों परिवारों के सदस्य बैतूल में **गांधीजी** के कार्यक्रमों में भाग लेते थे। अछूत बस्ती में स्वच्छता और शिक्षा का कार्यक्रम होता था। इस दौरान **भवानी भाई** ने अपने पिताजी के सुझाव पर प्राचीन भारतीय शिक्षण के तत्व को समाहित करते हुए बैतूल में एक पाठशाला की स्थापना करने का निर्णय लिया।

भवानी प्रसाद मिश्र

समीरमल गोठी के अनुसार उस समय बैतूल का म्युनिस्पल माध्यमिक स्कूल अच्छी तरह नहीं चल पा रहा था। चौथी और आठवीं में बोर्ड की परीक्षा होती थी। बैतूल में सरकारी विद्यालय खुल जाने से अधिकांश बच्चे उसी में पढ़ने लगे थे। सरकारी विद्यालय में अंकों के आधार पर प्रवेश दिया जाता था। इस कारण अनेक कमजोर और अनुत्तीर्ण हो जाने वाले बच्चे पढ़ाई से वंचित रह जाते थे। भवानी भाई ने बदहाल माध्यमिक विद्यालय को नगरपालिका से लीज पर ले लिया। यह मिश्रा माध्यमिक स्कूल भी कहलाता था। इस विद्यालय में पढ़ाई में कमजोर बच्चों, अनुत्तीर्ण छात्रों और सरकारी विद्यालयों में प्रवेश न पा सकने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता था। मिश्रा माध्यमिक विद्यालय में भवानी भाई के छोटे भाई लक्ष्मण मिश्र, बैतूल के अरविन्द मिश्र और इटारसी के रामस्वरूप वाजपेयी और मदनलाल चौबे अन्य शिक्षक थे। भवानी भाई स्वयं भी शिक्षक के रुप में स्कूल में पढ़ाया करते थे। कुछ ही समय में इसकी बैतूल के अच्छे विद्यालयों में गिनती होने लगी थी। इस विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ सामाजिक रचनात्मक कार्यों से भी बच्चों को जोड़ा जाता था। इस कारण पूरे बैतूल में राष्ट्र प्रेम से जुड़े कार्यक्रमों में अधिक से अधिक लोग जुड़ने लगे थे।

गांधीजी ने सन् १९४२ में **'भारत छोड़ो'** आंदोलन शुरु कर दिया था। इसके फलस्वरूप बैतूल के सभी बड़े नेता ८-९ अगस्त को गिरफ्तार कर लिये गये थे। ऐसे में **भवानी प्रसाद मिश्र** ने शहर के गांधीवादियों और नवयुवकों को संगठित कर एक बैठक बुलाई। इस बैठक में जिला कार्यालय पर तिरंगा झंडा फहराने की एक तिथि निश्चित की गयी। उस तिथि को **बल्लाभाई धर्माधिकारी** के नेतृत्व में एक जत्था देश प्रेम के नारे लगाता हुआ निकला। इस जत्थे में **भवानी भाई, बिरदीचंद गोठी, व्यंकट देवरिया, टेकचंद तांतेड, बाबूलाल लूनावत, रामू टेलर, गणेश प्रसाद पुरोहित, राम मूर्ति चौबे और दो बच्चे समीरमल गोठी और गौरी शंकर खंडेलवाल सम्मिलित थे।** ये सभी आंदोलनकारी तिरंगा लहराते और नारे लगाते हुए जैसे ही कलेक्टर कार्यालय के पास पहुंचे, पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर लिया। (कम उम्र होने के कारण दोनों बच्चों को गिरफ्तार नहीं किया गया।)

इन आंदोलनकारियों की गिरफ्तारी के बाद पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार छात्रों का आंदोलन शुरु हो गया। बैतूल में विद्यालयों के छात्रों ने घर-घर जाकर गांधी टोपी बांटने का काम शुरु कर दिया था। कक्षाओं के कक्षा-नायकों और अन्य सक्रिय छात्रों को ५०० गांधी टोपी बांटने का दायित्व सौंपा गया था। जैसा तय हुआ था सभी छात्र एक निश्चित तिथि को गांधी टोपी अपनी-अपनी जेब में रखकर विद्यालय पहुंचे। सभी छात्रों ने प्रार्थना में भाग लिया। प्रार्थना समाप्त होते ही सभी ने अपनी जेब में रखी गांधी टोपी निकाली और सिर पर धारण कर ली। सारा आसमान देशप्रेम के नारों से गूंज उठा।

बैतूल के पुलिस अधीक्षक के पुत्र **रवि कौल** और कोर्ट इंस्पेक्टर **हकीम राय** के पुत्र **हंसराज सैनी** ने छात्र साथियों के साथ मिलकर स्कूल में तिरंगा झंडा फहरा दिया। इसके साथ ही सभी छात्र देशप्रेम के नारे लगाते हुए पूरे शहर में जुलूस के रूप में घूमने लगे। पूरे बैतूल शहर में राष्ट्रीयता की लहर फैल गई।

भवानी भाई ने बदहाल माध्यमिक विद्यालय को नगरपालिका से लीज पर ले लिया। यह मिश्रा माध्यमिक स्कूल भी कहलाता था। इस विद्यालय में पढ़ाई में कमजोर बच्चों, अनुत्तीर्ण छात्रों और सरकारी विद्यालयों में प्रवेश न पा सकने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता था। मिश्रा माध्यमिक विद्यालय में भवानी भाई के छोटे भाई लक्ष्मण मिश्र, बैतूल के अरविन्द मिश्र और इटारसी के रामस्वरूप वाजपेयी और मदनलाल चौबे अन्य शिक्षक थे। भवानी भाई स्वयं भी शिक्षक के रुप में स्कूल में पढ़ाया करते थे। कुछ ही समय में इसकी बैतूल के अच्छे विद्यालयों में गिनती होने लगी थी।

बैतूल के राष्ट्रीय चेतना के ज्वार का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि वहां के आईसीएस कलेक्टर **आर.के.पाटिल** ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। वे बाद में **विनोबा भावे** के भूदान आंदोलन के जीवन भर कार्यकर्ता बने रहे थे। **भवानी भाई** की नागपुर सेन्ट्रल जेल से रिहाई २ वर्ष ८ माह और ८ दिन के बाद हुई थी। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश सरकार **भवानी प्रसाद मिश्र** की 'शिक्षक' और 'कवि' के रुप में भूमिका को कितना खतरनाक समझती थी।

ऐसा नहीं है कि **भवानी भाई** पहली बार ही किसी आंदोलन के सूत्रधार बने थे। **भवानी भाई** के साथ पढ़ने वाले होशंगाबाद के सर्वोदयी **बनवारीलाल चौधरी** भी **भवानी भाई** के छात्र जीवन के आंदोलन के किस्से सुनाते थे। **भवानी भाई** १९३१ में होशंगाबाद में हाई स्कूल छात्रावास में रहते थे। विद्यालय पर **ओंकार प्रसाद मिश्र** और **शंभुनाथ मिश्र** तिरंगा झंडा लहराना चाहते थे। पुलिस ने इन दोनों को गिरफ्तार कर लिया। छात्रावास अधीक्षक ने छात्रों को एकत्रित कर कक्षा में ले जाने का प्रयास किया। पर **भवानी भाई** थोड़ी दूर गये और एक दूसरे रास्ते से विद्यालय के बाहर निकल गये। ये विद्यालय की बाउंड्री-वाल के उस तरफ देर तक तिरंगा फहराने के लिये दौड़ते रहे थे कि अवसर मिले कि झंडा लहरा दें। यह **भवानी भाई** का पहला सत्याग्रह था। **भवानी भाई** ने लिखा है -

'जिस तरह हम बोलते हैं
उस तरह तू लिख
और इसके बाद भी
हमसे बड़ा तू दिख।'

स्वतंत्रता संग्राम में **भवानी भाई** ने जीने, बोलने और लिखने की एक आदर्श रेखा खींची थी। स्वतंत्रता के बाद **भवानी भाई** ने अपनी इस आदर्श रेखा को और अधिक बढ़ाया था। उनका जीने, बोलने और लिखने का आदर्श आपातकाल के काले दिनों में पूरे देश पर कभी न मिटने वाले एक इन्द्रधनुष की तरह तनकर खड़ा हो गया था। **भवानी भाई** का आदर्श आज भी पूरे लेखक समाज का प्रकाशस्तंभ बन कर खड़ा है। ❑

सर्वोदय प्रेस से साभार

Anopcharika_Sept_Oct_2012 Page 13

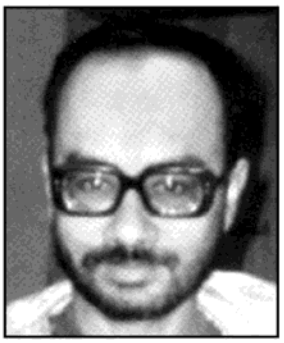

प्रो. सेन को सर्वोच्च सम्मान

❑

मुकुल व्यास

इलाहाबाद के हरीशचन्द्र रिसर्च इंस्टीट्यूट में मूलभूत भौतिकी में अनुसंधानरत प्रोफेसर अशोक सेन को पिछले दिनों विश्व का सर्वोच्च सम्मान मिला है। उनके काम की महत्ता को स्वीकारते हुए रूस की एक संस्था ने उन्हें पुरस्कार स्वरूप जो राशि दी है वह नोबेल पुरस्कार में दी जाने वाली राशि से तिगुनी राशि है। प्रो. अशोक सेन का अनुसंधान स्ट्रिंग थियरी पर है। उनके काम के बारे में एक संक्षिप्त परिचयात्मक आलेख प्रस्तुत है। नौजवान अध्यापक और अनुसंधान की बेमिसाल लगन का यह सम्मान सभी युवा भारतीय वैज्ञानिकों के लिये प्रेरक होगा। ❑ सं.

मूलभूत भौतिकी एक गूढ़ विज्ञान है। इसे फंडामेंटल फिजिक्स या थियरिटिकल फिजिक्स भी कहा जाता है। यह गूढ़ विज्ञान जरूर है लेकिन इसके अध्ययन से ही हम ब्रह्मांड की कार्य प्रणाली और उसके नियमों को समझ सकते हैं। विज्ञान का यह एक उपेक्षित क्षेत्र रहा है और इसमें सक्रिय वैज्ञानिकों के कार्यों का अक्सर नोटिस नहीं लिया जाता रहा है। अब एक **रूसी** धनकुबेर, **यूरी मिलनर** ने फंडामेंटल फिजिक्स में रिसर्च कर रही 'कुशाग्र प्रतिभाओं' को समुचित सम्मान दिलाने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने पुरस्कारों का सिलसिला आरंभ करते हुए नौ वैज्ञानिकों को पुरस्कृत कर दिया है। पहला पुरस्कार पाने वालों में भारत के सैद्धांतिक भौतिकी विशेषज्ञ **प्रो. अशोक सेन** भी शामिल हैं। **इलाहाबाद के हरीश चन्द्र रिसर्च इंस्टीट्यूट** से संबद्ध ५६ वर्षीय सेन को पुरस्कार के रूप में ३० लाख डॉलर (करीब १६.७ करोड़ रुपये) मिले हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा भौतिक विज्ञान का पुरस्कार है। पुरस्कार की राशि नोबेल की इनामी राशि से भी करीब तीन गुना ज्यादा है।

प्रो. सेन को यह पुरस्कार **स्ट्रिंग थियरी** पर उनके महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये दिया गया है। **स्ट्रिंग थियरी** एक बेहद पेचीदा गणितीय सिद्धांत है, जिसके सहारे ब्रह्मांड के गुरुत्वाकर्षण जैसे गूढ़ रहस्यों को समझने की कोशिश की जाती है। इतनी विशाल राशि वाले पुरस्कार से **प्रो.सेन** का खुश होना स्वाभाविक है लेकिन उन्होंने अभी यह तय नहीं किया है कि वे इस राशि का उपयोग किस प्रकार करेंगे। अत्यंत विनम्र **प्रो. सेन** इस पुरस्कार का **स्ट्रिंग थियरी** पर अपने कार्य के अनुमोदन के रूप में नहीं देख रहे हैं। वे इसे युवजनों के लिये एक प्रोत्साहन के रूप में देखते हैं। उनका मानना है कि इस

पुरस्कार से सैद्धांतिक भौतिकी में छात्रों की रुचि बढ़ेगी।

प्रो. सेन की अकादमिक पृष्ठभूमि बहुत शानदार रही है। कोलकाता के **प्रेसीडेंसी कॉलेज** और **आइआइटी, कानपुर** में अध्ययन के पश्चात वे अमेरिका चले गये थे। स्टोनीब्रुक, फर्मिलैब और स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन के बाद उन्होंने १९८८ में भारत लौटने का फैसला किया। **प्रो. सेन** चाहते तो वे विदेश में ही रह कर अपना करिअर आगे बढ़ा सकते थे लेकिन उन्होंने तमाम तरह के आकर्षणों को नजर अंदाज करते हुए देश लौटना ही बेहतर समझा। मुंबई के **टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च** में कुछ समय कार्य करने के पश्चात वे १९९५ में **इलाहाबाद** के **हरीशचन्द्र रिसर्च इंस्टीट्यूट** में आ गये। **प्रो. सेन** अपने संस्थान के शैक्षणिक माहौल से प्रसन्न हैं। उन्हें अनुसंधान के लिये सरकार और संस्थान का पूरा समर्थन हासिल है।

प्रो. सेन भारत में अनुसंधान के भविष्य को लेकर काफी आशान्वित हैं। वे कहते हैं कि हम सभी चाहते हैं कि भारत में वैज्ञानिकों की संख्या बढ़े और ज्यादा अनुसंधान हों। देश में ऐसी कई जगहें हैं, जहां अच्छे अनुसंधान हो रहे हैं जो दूसरे देशों के वैज्ञानिकों की सफलता को यहां दोहराने की क्षमता रखते हैं। **प्रो. सेन** का कहना है कि हमें विज्ञान के अध्ययन के लिये अधिक से अधिक संस्थान स्थापित करने चाहिये ताकि ज्यादा से ज्यादा छात्रों को विज्ञान की तरफ आकृष्ट किया जा सके और ज्यादा से ज्यादा छात्रों को अपनी प्रतिभा निखारने के अवसर मिल सकें।

मूलभूत भौतिकी पुरस्कार शुरू करने वाले **रूसी अरबपति यूरी मिलनर** की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है वे खुद भौतिक शास्त्र के ज्ञाता हैं। **मिलनर मॉस्को के लेबेदेव फिजिक्स इंस्टीट्यूट** में अनुसंधानकर्ता थे। उन्होंने भौतिकी में डॉक्टरेट को बीच में ही छोड़ कर फेसबुक, ट्वीटर और ग्रुपन जैसी इंटरनेट आधारित कंपनियों में निवेश शुरू कर दिया। इससे उन्होंने अरबों डॉलर कमाए। मिलनर की इस बात के लिये प्रशंसा की जानी चाहिये कि उन्होंने अपनी कमाई के एक हिस्से का उपयोग दुनिया के भौतिक वैज्ञानिकों को पुरस्कृत करने के लिये किया। **प्रो. सेन** के अलावा आठ और वैज्ञानिकों को भी यह पुरस्कार मिला है। प्रथम विजेताओं का चुनाव मिलनर ने खुद किया है, लेकिन अगले वर्ष से प्रथम विजेताओं की जूरी नये विजेताओं के नाम तय करेगी। **मिलनर** का उद्देश्य मूलभूत भौतिकी के क्षेत्र में सक्रिय वैज्ञानिकों के कार्यों को उचित सम्मान दिलाना है। उन्हें उम्मीद है कि इन पुरस्कारों से उन वैज्ञानिकों का उत्साह बढ़ेगा, जो इस क्षेत्र में गहन अनुसंधान कर रहे हैं और जो भविष्य में इस क्षेत्र में गहन अनुसंधान कर रहे हैं और जो भविष्य में इस क्षेत्र में उच्च योगदान करने की क्षमता रखते हैं।

मिलनर का कहना है कि नये पुरस्कारों का मकसद नोबेल पुरस्कारों से किसी तरह की कोई प्रतिस्पर्धा करना नहीं है। दोनों में बहुत अंतर है। यह पुरस्कार युवा अनुसंधानकर्ताओं को भी मिल सकता है क्योंकि सैद्धांतिक निष्कर्षों की प्रायोगिक पुष्टि अनिवार्य नहीं होगी। ज्यादा से ज्यादा तीन वैज्ञानिक नोबेल पुरस्कार को शेयर कर सकते हैं, लेकिन यूरी मिलनर पुरस्कारों के लिये ऐसी कोई सीमा निर्धारित नहीं की गयी है। कोई भी व्यक्ति विजेता का मनोनयन ऑन लाइन कर सकता है, जबकि नोबेल पुरस्कारों के लिये विजेताओं का चयन गुप्त प्रक्रिया से होता है। **मिलनर** के मुताबिक, मूलभूत भौतिकी के क्षेत्र में वैज्ञानिकों को पुरस्कार ऐसे समय में दिया जाता है जब उनका कॅरिअर लगभग समाप्त हो चुका होता है। आज हिग्स बोसोन कण के लिये ब्रिटिश फिजिसिस्ट **पीटर हिग्स** को नोबेल पुरस्कार देने की चर्चा चल रही है। **प्रो. हिग्स** ८३ वर्ष के हो चुके हैं, जबकि **हिग्स बोसोन कण** के बारे में उन्होंने ४८ वर्ष पहले थियरी पेश की थी। **मिलनर फांउडेशन** मुख्य पुरस्कारों के अलावा दो और पुरस्कार भी देगा। इनमें से एक पुरस्कार जूनियर रिसर्चरों को दिया जायेगा, जबकि दूसरा एक विशेष तदर्थ फंडामेंटल फिजिक्स प्राइज होगा। **मिलनर** ने यह नहीं बताया कि उन्होंने नोबेल से ज्यादा पुरस्कार राशि किस आधार पर तय की है, लेकिन उन्होंने यह जरूर स्पष्ट किया कि वह इन पुरस्कारों के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि **फंडामेंटल** फिजिक्स भी महत्त्वपूर्ण है, अत: राशि भी अच्छी खासी होनी चाहिये। ❑

शुक्रवार साप्ताहिक १६ अगस्त २०१२ से साभार

शिक्षकों एवं लेखकों से अपील

❑

शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे हर नव-प्रयोग को हम सविस्तार अनौपचारिका में प्रकाशित करना चाहते हैं। शिक्षकों और शिक्षाकर्मियों से अनुरोध है कि वे अपने प्रयोगों अथवा नये प्रयासों के अनुभव लिखकर भिजवायें। हमें अच्छे लेखों व शिक्षा की नयी किताबों पर टिप्पणियों की भी प्रतीक्षा रहती है। पाठक अपनी रचनाएं भिजवाकर अनुग्रहीत करें। रचना के साथ रचना संबंधी फोटो तथा स्वयं का फोटो भी अपने संक्षिप्त परिचय के साथ अवश्य भिजवायें। ❑ सं.

Anopcharika_Sept_Oct_2012 Page 15

नाज़िक अल–मलायका के पांच गीत

अवसाद के नाम

एक

वह है, देने वाला
हमारी रातों को दुख और विषाद।
उसी ने तो भरी है सजगता
हमारी आंखों के प्यालों में।

हमने उसे पाया था
बारिस की एक सुबह राह चलते।
बड़े प्यार से उसका शाना थपथपा दे डाला वह कोना
जो धड़कता था हमारे दिल के कोने में।

पता नहीं वह छोड़ गया हमको या फिर ओझल हो गया,
हमारी नज़रों से सदा के लिए।
वह भ्रम था मेरा, जहां भी हमारा अस्तित्व था
पीछा करता रहा वह हमारा लगातार।

काश! हम उस नीली बरसाती भोर में
उसको मुंह न लगाते!
साकी!
जिसने भर दी हमारी आंखों में सजगता। ❑

दो

कैसे बिसरा दें हम व्यथा को?
कैसे भूल जायें हम उसको?
जिसे हम सदा ओढ़ते बिछाते हैं। और
पीछा करते हैं उसके छोड़े गये यायावरी कदमों का
और जब,
हम सोते हैं तो जो आखरी चीज देखते हैं
उसके भ्रभंग तेवर से निर्मित देवालय को
और आंख खुलते ही फिर उसके दर्शन करते हैं।
उसे ले चलते हैं हम अपने संग
जहां तक ले जाती है हमारी इच्छाएं और जख्म!
आखिर हम क्यों नहीं उसकी सीमा निर्धारित कर देते हैं।

नाज़िक अल–मलायका बगदाद में १९२३ में पै
कॉलेज बगदाद के अरबी विभाग से ली। आपके
राख, चांद–वृक्ष, लहरों का तल, समन्दर का रं
विषय। कुवैत विश्वविद्यालय में १९६९ से अध्य
कविताएं बगदाद के विध्वंस पर चार पांच दहाई
है जैसे वर्तमान बगदाद की स्थिति पर यह पंक्तियां
से निकलती है वह साबित करती है कि इस पूरे इ
है और उससे आज इन्सान पीढ़ी–दर–पीढ़ी जूझ
हम न जायें तो यह कविताएं उस दुख को हमसे
किसी रूप से मौजूद रहता है और वह ताजिन्दगी
यही सच इन कविताओं व

अपनी उत्कंठा और चांद के बीच
अपनी प्यास और निर्मल स्वच्छ झरने के बीच
अपनी आंखों और दृश्य के बीच
मगर हम उसे एजाज़त दे बैठते हैं कि
वह बो दे हमारी आंखों में व्यथा और समय के फेर को।
हम गुलाबी नशे में डूब अपनी कविताओं के चिथड़ों को
दे बैठते हैं वक्राकार रूप।
लेकिन अंत में वर्तमान धो डालता है वह सब कुछ
कैक्टस जिसका सिरहाना था और क्षमा ने घाटी में
डेरा डाल लिया था।
शुभसंध्या। हमारी व्यथा को
हम भूल जायेंगे। ❑

तीन

आखिर कहां से आन खड़ा होता है
यह अवसाद हमारे सम्मुख
आखिर कहां से ? जो जुड़वां भाई है हमारे सपनों का
और हमारे गीतों को दे रहा है लय आदिम काल से।
कल हम उसके साथ गये उछलती जल तरंगों में।
जहां झील की लहरों में
उसे हमने तोड़ा और बहा दिया, बिना
आह भरे और आंसू गिराए।
हमने सोचा कि हम सुरक्षित लौट आये हैं।
अब हम कभी आहत नहीं होंगे।
अब हमारी मुस्कान को उदासी नहीं छीनेगी
अब हमारे गीतों में नहीं बोयेगी कड़वे अनुभवों के बीज।
हम तक पहुंचा वह लाल गुलाब
सुगन्ध से तर बतर।
उसे भेजा था हमारे मित्रों ने
समन्दर के उस पार से।
इसको हम किस बात का संकेत समझें
खुशी या शांति का !
वह गंध जाने कहां गुम हो गयी
गर्म उबलते आंसुओं के संग।
अपनी उदास उंगलियों से हमने थपथपाया
'हम प्यार करते रहेंगे तुम्हें ए मेरे अवसाद।'
आखिर कहां से आन खड़ा होता है दुख हमारे सम्मुख
आखिर कहां से ? जो जुड़वा भाई है हमारे सपनों का। ❑

२३ में पैदा हुईं। बी.ए. की डिग्री में हायर टीचर्स ट्रेनिंग
। आपके प्रसिद्ध संग्रह–रात के आशिक, चिंगारी और
र का रंग, आलोचना की पुस्तक, वर्तमान कविता के
से अध्यापन कार्य में रत सीरियन कवि नाज़िक की यह
व दहाई पहले लिखी गई थीं। इन्हें पढ़कर महसूस होता
पंक्तियां अभिव्यक्त की गई हैं। जो बात इन कविताओं
स पूरे इलाके में महाशक्तियों का तांडव कब से चल रहा
ढ़ी जूझ रहा है। राजनैतिक ऐतिहासिक परिदृश्य में यदि
ो हमसे मिलवाती हैं जो हर इन्सान के दिल में किसी न
ाजिन्दगी उससे मुक्ति के लिए छटपटाता रहता है और
ताओं को ताजा रखे है। ❑ सं.

चार

क्या कभी उबर पायेंगे हम अपने दुखों से
या फिर सदा की तरह टालते रहेंगे
सुबह या शाम के लिए ?
अधिकार जमा लो या फिर खेल खेल में उसे राज़ी कर लो
गीत के द्वारा, किसी भूली बिसरी धुन को सुना कर।
मगर प्रश्न है : दुख होगा कौन ?
एक छोटा बच्चा अपनी जिज्ञासा से भरी आंखों के संग
गूंगा, या फिर सहानुभूति भरी थपकन!
खुश कर दो उसे !

जब हम गायेंगे, मुस्कुरायेंगे तो उसे नींद आ जायेगी
अरे, मेरी उंगली जिसने दिया हमें आंसू और पछतावा
हमारे दुखों के आगे,
कौन बन्द करेगा अपने दिल का दरवाजा।
तब वह पहुंचेगा हम तक रोता, यह कहता कि
हम उसे प्यार करें और क्या ?
भूल जायें घावों को और मुस्कुराएं ?
यह बच्चा सबसे मासूम तानाशाह है
हमारा प्रिय शत्रु और कड़वे मित्र
आह । तुम थे जिसे घोंपा था चाकू और कहा था
बिना विरोध दिखाए तड़पना और छटपटाना
अरे मेरे छोटे बच्चे।
हमें माफ करना हाथों और होंठों से
आखिर तुमने खोद ही लिया हमारी आंखों से
बहते आंसुओं का स्रोत और हो गये उत्तेजित!
हमारा घाव यहां और वहां है और
हम बहुत पहले माफ कर चुके हैं गलतियों को !❑

पांच

ओ वेदना हमारे प्यार की
हमने तुम्हें अपना शासक समझ
पौ फटते ही तुम्हारे सर पर ताज रख दिया है ।
तुम्हारी रुपहली बेदी पर अपना माथा रगड़
लोबान जला, तिल और क्षौम की सुगन्ध बिखेरी है।
हमने आहुत अर्पण कर बैबिलॉन के राग पर
अपने हाइमन्स गाये हैं।
हमने तुम्हारे लिए सुगन्धित दीवारों से
देवालय निर्मित कर उसके फर्श को
जैतून के तेल से खूब चमकाया है !

ताजा अंगूर-रस, गर्म खौलते आंसू
लम्बी ठंडी रातों में पाम वृक्षों को जला
होंठ भींचे अपनी गहरी उदासी के संग
हमने गेहूं को तुम्हारे लिए पीसा है !
इस सब के बाद
हमने फिर गाया और
आने वाली घटनाओं के लिए मनौतियां मानी :
उन्मत्त बैबीलॉन के पाम वृक्षों से खजूरें
रोटी, वाइन और खिले ताज़ा गुलाब अर्पित कर
हमने तुम्हारी आंखों के लिए प्रार्थना कर बलि चढ़ाई।
और हमने अपने आंसुओं को जमा कर
उससे जपमाला बनाई
अरे, तुम ! जिसकी कृपा से हमें गीत और राग मिले
तुम वह आंसू बने जिसने हमें विवेक प्रदान किया।
तुम तो ज्ञानेन्द्रिय के फौव्वारे हो !
ओह ! तुम । उपजाऊ और धनवान!
ओह ! तुम। प्रचंड वेदना !
ओह, तुम तो कोप हो जिससे टपकी है दया की बूंदे !
हमने सब कुछ कर लिया था अपने सपनों में,
अपने उदास गीतों की प्रत्येक पंक्ति में! ❑

अनुवाद : नासिरा शर्मा
नयी दिल्ली

राष्ट्र के अर्थ

❑

डॉ. रेणुका राठौड़

क्या आपने कभी शब्द की धड़कन को सुना है ? उसके स्पन्दन को महसूस किया है ? प्रश्न कुछ विचित्र है किन्तु एक उदाहरण से समझा जा सकता है। जरा 'राष्ट्र' शब्द पर विचार कीजिये। अभी हाल ही में आजादी का पर्व मनाने के बाद तो यह शब्द हम भारतीयों के दिलों में एक गूंज पैदा कर देता है। राष्ट्र भक्ति से ओत प्रोत गाने एवं कवितायें लाखों हृदयों में एक ज्वार उठा देती हैं। कितना विचित्र है यह अहसास कि एक शब्द हजारों वर्षों के इतिहास को एक साथ समेट लेता है। हममें से हर भारतीय को एक-दूसरे के साथ जोड़कर मानव-अस्तित्व की पुरातन शृंखला को जीवन्त कर देता है। हमारे शरीर में एक झंकार पैदा कर देता है, मन को अनायास ही अभिभूत कर लेता है।

पर यह भी सच्चाई है कि शब्द की यह धड़कन हर-एक को सुनायी नहीं देती। स्वयं को परम्पराओं से जोड़ना एक कठिन काम है। आजादी के दिनों में 'राष्ट्र' की अस्मिता का जितना ज्वार हमारी उस पीढ़ी के दिलों में था उतना आज की पीढ़ी में दिखलाई नहीं पड़ता। जो दर्द उनके शब्दों में था उसका एक अंश भी हमारे हाव-भाव में नहीं है। दरअसल, सभ्यता और संस्कृति की बेल हर पीढ़ी को सींचनी पड़ती है अगर कोई एक पीढ़ी भी इसका संवर्धन न करे तो वह बेल विच्छिन्न होने लगती है। उसका सच उतना ही सीमित और संकुचित हो जाता है।

हालात तो यहां तक बदल गये हैं कि हमारी अधिकांश नयी पीढ़ी अब यह मानती है कि एक 'राष्ट्र' के रूप में भारत का संगठित होना आधुनिक घटना है। विगत दो शताब्दियों में विदेशियों द्वारा मांजा गया हमारा नया इतिहास यह कहता है कि सबसे पहले अंग्रेजों ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में एकीकृत किया। वास्तव में यह दृष्टिकोण का अंतर है। पाश्चात्य परम्परा यह मानती है कि एक राष्ट्र बनने के लिये भूमि, भाषा, नस्ल, धर्म और राज्य की एकता आवश्यक है जबकि भारत-भूमि इन मानदंडों से अलग वैविध्य से परिपूर्ण थी, है और रहेगी भी। **महात्मा गांधी** ने सन् १९०९ में अपनी पुस्तक **'हिन्द-स्वराज'** में लिखा था-**'हमें अंग्रेजों ने सिखाया है कि हम एक राष्ट्र नहीं थे और एक राष्ट्र बनने के लिये हमें सैंकड़ों बरस लगेंगे। यह बात बिल्कुल बेबुनियाद है। जब अंग्रेज हिन्दुस्तान में नहीं थे, तब भी हम एक राष्ट्र थे।'**

क्या किसी 'राष्ट्र' का निर्माण मात्र एक भौगोलिक घटना है कि जमीन के कुछ भागों को जोड़ा और एक राष्ट्र बना लिया। उनमें एकत्व और परस्पर समन्वय का वह मूलभूत तत्व क्या कहीं कृत्रिम रूप से तैयार किया जा सकता है। वस्तुत: 'राष्ट्र' के सम्बन्ध में भारतीय चिन्तन पाश्चात्य विचारधारा से बिल्कुल अलग है। भारत में 'राष्ट्रीयता' का मूल आधार सांस्कृतिक है। इसी कारण सैकड़ों वर्षों के इतिहास में अनेक भौगोलिक परिवर्तनों के बाद भी भारत की राष्ट्रीयता का सूत्र कहीं खंडित नहीं हुआ है। 'राष्ट्र' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वेदों में प्राप्त होता है और एक या दो बार नहीं वरन् यह शब्द शताधिक बार वेदों में प्रयुक्त हुआ है।

राष्ट्र शब्द के मूल में 'राज्' धातु है जो कान्ति अथवा दीप्ति के अर्थ में प्रयोग में आती

है। राज् धातु से औणादिक ष्ट्रन्-प्रत्यय लगकर यह शब्द निष्पन्न होता है राजते, दीप्यते, प्रकाशते, शोभते इति राष्ट्रम-जो स्वयं देदीप्यमान हो अथवा विविध वैभवों से सुशोभित हो, वही राष्ट्र है। राज् धातु ही यह स्पष्ट कर देती है कि ओजस्विता तथा कान्तियुक्त स्वाभिमान राष्ट्र का प्राण तत्त्व है। राष्ट्र केवल एक भौगोलिक सीमाओं में बसा भूभाग नहीं है वरन् भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के मेल से राष्ट्र का निर्माण होता है।

ईसा से कई सौ बरस पहले, जब विश्व के अधिकांश भागों में सभ्यता ने आंख भी नहीं खोली थी, भारत भूमि वैदिक ऋचाओं के गान से गुंजायमान थी। ऋग्वेद और अथर्ववेद में ऋषि बारम्बार राष्ट्र के स्वरूप का गौरव गान करते हैं किन्तु एक बात जानना बहुत आवश्यक है कि उनका राष्ट्र-प्रेम संकुचित और संकीर्ण नहीं है । वह सारी विविधता को प्रसन्न भाव से अंगीकार करता हुआ सम्पूर्ण वसुधा तथा प्राणीमात्र को समेटे हुए है। 'यत्र विश्वं भवति एकनीडं' तथा 'माता भूमि:पुत्रोऽहं पृथिव्या:' की व्यापकता तथा सार्वजनीनता वेद का उद्घोष है।

अथर्ववेद में एक पूरा सूक्त ही 'पृथिवी सूक्त' के नाम से विख्यात है। इस सूक्त की रचना करते समय मानो ऋषि का राष्ट्र-प्रेम उमड़ पड़ता है। चूंकि वैदिक चिन्तन काल की सीमाओं से परे शाश्वत चिन्तन है। जब ऋषि उस विराट तत्व का दर्शन कर रहे हों तो राष्ट्र-प्रेम की ऐसी अविकल धारा बही कि उसमें व्यष्टि-समष्टि का सम्पूर्ण कलेवर समा गया। चूंकि यह शुद्ध, तात्विक चिन्तन है इसलिये मैं यह सोचने की भी धृष्टता नहीं कर सकती कि यह किस काल-खंड में निर्मित हुआ होगा। यह राष्ट्र-प्रेम तो शाश्वत है-कल भी था, आज भी है और सदा-सर्वदा रहेगा।

यार्णवेधि सलिलमग्र आसीत्
यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिण:।
यस्या हृदयं परमे
व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्या:।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलंराष्ट्रेदधातूत्तमे।।

अथर्ववेद १२.१.८

वेदमनीषी डॉ. फतहसिंहजी ने इस मंत्र की बहुत सुन्दर व्याख्या की है जो उत्तम राष्ट्र की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करता है। **डॉ. फतहसिंह जी** कहते हैं कि **यहां जिस भूमि या पृथिवी का उल्लेख है वह हमारे सुपरिचित ग्रहपिण्ड से सर्वथा भिन्न एक भावना-भूमि है। यहां जिस पृथिवी का वर्णन है, उसका एक हृदय है और वह भी 'अमृत हृदय' है। जो कि सत्य से आवृत्त है। यह हृदय जन-जन के भीतर है। यहां जिस परम व्योम की बात कही गयी है वह देश-कालातीत है चेतना की चरम स्थिति है। फिर मूलत: वह एक सर्वोच्च समुद्र में (अग्रे अर्णवे) 'सलिल' पर स्थित है। यहां केवल उन्हीं मनीषियों की पहुंच है जो प्रकृति (माया) की रहस्यमय शक्तियों का अनुभव करने में समर्थ हैं। ऐसी उस भूमि से निवेदन है कि वह हमारे उत्तम राष्ट्र में तेज और बल स्थापित करे।**

वैदिक ऋचाओं का भावार्थ अत्यन्त दुष्कर कार्य है, उन्हें शब्दों में समेटना एक चुनौती ही है इसे भावना के स्तर पर कुछ स्पर्श अवश्य किया जा सकता है। वैदिक राष्ट्र को ठीक से समझ पाने के लिये पहले हमें व्यक्तिगत राष्ट्र अर्थात् मानव शरीर को समझना होगा। आध्यात्मिक दृष्टि से हमारा यह मानव-शरीर ही व्यष्टिगत राष्ट्र है। जिसमें प्रत्येक अंग अपने सहयोग एवं समर्पण के द्वारा शरीर को पूर्णता प्रदान करता है। यही व्यष्टि जब समष्टि में परिणत होती है तो भौतिक राष्ट्रों का उदय होता है। भूमि, राज्य, प्रशासनिकता, राज्य के संगठनात्मक अंग-यह सभी स्थूल आवश्यकताएं हैं किन्तु राष्ट्र के निर्माण में मुख्यत: भावनिष्ठा अनुस्यूत है, इसलिये **पृथिवी सूक्त** का प्रारंभ ही उन धर्मों के निर्देश के साथ होता है जो पृथिवी को धारण करते हैं-

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो
ब्रह्म यज्ञ: पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं
लोकं पृथिवी न: कृणोतु।।

अथर्ववेद १२.१.२

अथर्ववेद के इस मंत्र को दोनों स्तरों पर समझने की आवश्यकता है। एक उत्तम राष्ट्र तभी सम्भव है जब व्यष्टिगत तथा समाष्टिगत दोनों स्तरों पर इसे घटित किया जाये। व्यष्टिगत रूप में मनुष्य व्यक्तित्व के भूत, वर्तमान तथा भविष्य को उन्नत एवं समृद्ध बनाने के लिये निम्न तत्त्व आवश्यक हैं-

१. बृहत् सत्यं (व्यापक सत्य)
२. उग्रं ऋतम् (कठोर अन्त: अनुशासन)
३. दीक्षा (संकल्पशक्ति)
४. तप (परिश्रम)
५. ब्रह्म (ज्ञान अथवा विद्या)
६. यज्ञ (नि:स्वार्थता)

यही तत्त्व जब प्रत्येक राष्ट्रवासी में प्राणभूत होकर स्थिर हो जाते हैं तो एक महान राष्ट्र के आधारभूत तत्त्व बन जाते हैं। तब बृहत् सत्य, ऋत, उग्र, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ-ये सात तत्त्व पृथिवी को धारण करते हैं। बृहत्त सत्य से सत्यप्रियता, ऋतु से शाश्वत नियम, उग्र से तेजस्विता, दीक्षा से उद्योगशीलता अथवा क्रियासंकल्प, तप से तपस्या या नियमबद्धता, ब्रह्म से ज्ञान तथा यज्ञ से श्रेष्ठ कर्म अथवा आत्मसमर्पण का अभिप्राय है। ये सात धारक तत्त्व, राष्ट्र के व्यापक रूप को धारण करने वाले तत्त्व हैं। यही राष्ट्रधर्म हैं।

राष्ट्र के संबंध में यह भारतीय दृष्टि है जिसे प्रत्येक भारतीय तक पहुंचाया जाना चाहिये। अथर्ववेद का ऋषि अपनी जन्म भूमि के प्रति

दिव्य भावों के स्फुरण लिए कहता है –

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे
यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तन ।
गवामश्वानां वयश्च विष्ठा भगं
वर्चः पृथिवी नो दधातु ।।

अथर्ववेद १२.१.५

इसका रूपान्तरण कुछ इस प्रकार किया जा सकता है कि 'यही वह भूमि है जिसमें हमारे पूर्वजों ने नाना प्रकार के महान कार्य किये। यहीं पर हमारे भीतरी देवतत्वों ने असुरतत्त्वों (काम–क्रोधादि) को पराजित किया। यहीं गौ आदि अमृत तुल्य दुग्ध प्रदान करने वाले, अश्वादि द्रुतगति से दौड़ने वाले पशुओं तथा मुक्त गगन में उड़ने वाले पक्षियों का निवास है। ऐसी यह मातृभूमि हमें तेज और ऐश्वर्य से परिपूर्ण कर दे।'

अपने परिवेश के प्रति इतना आदर–भाव जिसकी सन्तति में हो वह अपने वातावरण को कैसे प्रदूषित कर सकता है, कैसे पेड़ों, नदियों, पशु–पक्षियों को हानि पहुंचा सकता है ? संवेदना की इतनी सुन्दर अभिव्यक्ति भला और कहां संभव है –

यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूवयं
विभ्रत्योषधयो यमापः ।
यं गन्धर्वा अप्सरश्च भेजिरे तेन मा
सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन ।।

अथर्ववेद – १२.१.२३

'हे मातृभूमि। तुमसे जो दिव्य गंध उत्पन्न हो रही है, जिस गंध को औषधियां धारण करती हैं, जिसको जल धारण कर रहे हैं, जिसको सुन्दर युवक–युवतियां प्राप्त कर रहे हैं, उस अपनी गंध से मुझको भी सुन्दर गंध वाला बना दे। कोई भी हमसे द्वेष न करे।'

संस्कृति वह गंध है जो राष्ट्र के जन–जन में एक–दूसरे के प्रति आत्मीयता और राष्ट्र भूमि के प्रति ममता पैदा करके स्नेहसक्ति–सहयोग और सहानुभूति का एक साम्राज्य खड़ा कर देती है। **डॉ. फतहसिंह** जी कहते हैं कि इस सांस्कृतिक गंध के अभाव में शिला, पत्थर और धूल आदि जड़ वस्तुओं की मूर्तिमती वस्तु भी अपनी दृढ़ता खो देती है। पर जब सत्य, ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म, यज्ञ आदि तत्त्वों को राष्ट्रधर्म के रूप में धारण किया जाता है तो पृथिवी के वृक्ष, वनस्पति भी ध्रुव हो जाते हैं।

राष्ट्र के विषय में हमारा यह प्राचीन चिन्तन वास्तव में वर्तमान की आवश्यकता एवं भविष्य की रूपरेखा है। आज का राष्ट्र वैदिक ऋषि द्वारा परिकल्पित राष्ट्र नहीं है और न ही आज का नागरिक ही वैसा है किन्तु जैसा हमारा राष्ट्र होना चाहिये तथा जैसे उस राष्ट्र के नागरिक होने चाहिये, वह वेद का राष्ट्र है। इसीलिये वेद की दृष्टि भविष्योन्मुखी है। वेदों ने हमारे सम्मुख शाश्वत मानदंड रखे हैं। काल के विकराल थपेड़ों से आज हमारा राष्ट्र भले ही अपना स्वधर्म विस्मृत कर चुका हो किन्तु हमारी सांस्कृति आवश्यता तो वही वैदिक राष्ट्र ही है। ❑

'सागरमाथा' करणी विहार कॉलोनी
झोटवाड़ा, जयपुर

कृपया अनौपचारिका से दोस्ती करें

❑

मैत्री समुदाय

यह समुदाय अनौपचारिका के मित्रों का समुदाय है। ऐसे मित्रों का जो इसे स्वावलंबी बनाना चाहते हैं। उनका जो इसे पांवों पर खड़ा करना चाहते हैं। उनका जो इस पत्रिका को सामाजिक एवं सामुदायिक सहयोग से संपन्न होने वाला सफल आयोजन बनाना चाहते हैं। ऐसे प्रेमी मित्रों का एक विशद समुदाय बनाना हमारा सपना है। क्या आप इस मैत्री परिवार के सदस्य हैं ? यदि नहीं हैं तो कृपया शीघ्र बनिए। हमारे सपने को साकार करने में सहयोग दीजिए। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट से रुपये एक हजार पांच सौ अथवा उससे अधिक श्रद्धानुसार शीघ्र भिजवाइए। ड्राफ्ट या चैक राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर अथवा अंग्रेजी में Rajasthan Adult Education Association के नाम हो।

हमारा पता है –

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
७–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर–३०२००४

हम अनौपचारिका के हर पाठक एवं हर सहयोगी संस्था से अपील करते हैं कि मैत्री–समुदाय की सदस्यता शीघ्र ग्रहण करें। सादर। ❑ **संपादक**

Anopcharika_Sept_Oct_2012 Page 21

परदेस में पनपता सेवाभाव

❑

सुदेश बत्रा

हिन्दी की सुप्रसिद्ध साहित्यकार सुदेश बत्रा से अनौपचारिका के पाठक परिचित हैं। सुदेशजी राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की अध्यक्ष भी रही हैं और रचनारत साहित्यकार भी। पिछले दिनों सुदेश जी अमेरिका के प्रवास पर थीं। वहां की शालाएं भी देखीं और वहां रहने वाले भारतीय समाज का भी एक साहित्यकार की दृष्टि से अध्ययन किया। इंडिया एब्रॉड जैसे अखबार में भारत के नाना रूप–रंग देखे। उनके आंखों देखे अनुभव में भारतीय समाज और भारतीय बालकों का सेवाभाव उभर–उभर कर प्रकट हो रहा है। प्रस्तुत है एक आत्मीय आलेख। ❑ सं.

इसमें कोई संदेह नहीं कि स्कूलों के अम्बार और बड़े–बड़े नामों के बावजूद हम अपने बच्चों के भविष्य के लिये चिंतित हैं। विद्वतजन अनेक सुझाव भी देते हैं और नयी–नयी नीतियां भी निर्धारित होती रहती हैं किन्तु फिर भी प्रत्येक स्कूल के वातावरण, गतिविधियों और प्रतिबद्धता में अन्तर दिखलायी देता है। पब्लिक स्कूलों और सरकारी स्कूलों में तो जमीन आसमान का अंतर है। शिक्षा पद्धति और अन्य गतिविधियों में भी होड़ हो सकती है किन्तु मूल भावना है बच्चों में स्वावलम्बन और सेवाभाव की। क्या हमारे स्कूल बच्चों में नैतिकता और सामाजिक मूल्यों का संरक्षण कर पा रहे हैं।

प्राय: हम विदेशी स्कूलों और उनकी कार्य पद्धति के भी उदाहरण देते हैं, विशेष रूप से अमेरिका से। किन्तु एक ग्रंथि यह भी है कि हमारे मन में प्रत्यक्ष रूप से अमेरिका के प्रति नकारात्मक भाव अधिक है। प्रश्न यह है कि वहां की संस्कृति और सोच को एकांगी दृष्टिकोण से न देखकर, वहां की कार्य–संस्कृति को समझा जाये। वहां जो अच्छी बातें हैं, उन्हें अपने वातावरण के अनुकूल अपनाने की चेष्टा करें। जैसे वहां का अनुशासन, सफाई, शांति और समय का सही उपयोग हमें सीखना ही होगा। क्या हमने कभी सोचा है कि हम समय की बरबादी कितनी निरर्थक बातों में और सारहीन भावुकता में करते हैं। यदि यह समय बच्चे स्वावलम्बन और सेवाभाव में लगा सकें तो उनकी ऊर्जा सार्थक हो जायेगी।

अमेरिका में भारतीयों ने एक अलग दुनिया बसा ली है। वे यहां नौकरी करते हैं, व्यापार करते हैं, यहां के गोरे लोगों के साथ व्यवहार भी करते हैं, प्रतिस्पर्धा भी करते हैं, उन लोगों की वेशभूषा और खानपान भी अपनाते हैं पर दोस्ती भारतीयों से ही करते हैं। फिर चाहे वह पंजाबी हो या

गुजराती उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। घरों में भारतीय भोजन भी पकता है पर खीर, पूड़ी, हलवा का जायका वे नहीं लेना चाहते। दीवाली, होली आदि भारतीय पर्वों को प्राय: वे लोग मंदिरों में मिल कर मनाते हैं। ये समारोह अपने मित्रों के बीच आत्मीय भाव से संपन्न होते हैं। दीवाली पर बिजली की बत्तियां या मोम के दिये जलाकर पूजा की जाती है पर लकड़ी के बने घरों में पटाखे नहीं चलाये जाते।

भारत से जाने वाले व्यक्ति के लिये पहली ही नजर में समृद्धि और कल्पनातीत सफाई का अहसास होता है। बड़े-बड़े हवादार खुले खुले घर, हरियाले लॉन, दो तीन बड़ी-बड़ी कारें, हर प्रकार की भौतिक सुविधाएं, बेशुमार खाना, सुहावना मौसम, कोई प्रदूषण नहीं, कोई शोर नहीं, कोई ट्रैफिक जाम नहीं, कोई हड़ताल नहीं, जुलसू, धरने नहीं। सड़कों पर गाड़ियों के अलावा इक्के-दुक्के लोग नजर आते हैं। अधिकांश वृद्ध, बच्चे या घरेलू गृहिणियां, मॉल्स में सामान खरीदते लोग, बहुत धैर्यपूर्वक अपनी बारी का इंतजार करते पंक्तिबद्ध खड़े लोग। बड़ी-बड़ी कार-पार्किंग, लगता है जैसे किसी रिमोट कंट्रोल से सारी व्यवस्था चलायी जा रही है। सड़कों पर, हर चौराहे पर 'रुको' का बोर्ड प्रत्येक कार चालक पैदल चलने वालों को पहले जाने का मौका देता है। छिपे हुए कैमरे कार-चालकों पर सूक्ष्म दृष्टि रखे रहते हैं। चौड़ी-चौड़ी सड़कों पर अनेक बत्तियों वाली पुलिस गाड़ियां दूर-दूर घूमती रहती हैं ताकि वे जनता की आवश्यकता के लिए फौरन उपलब्ध हो सकें। वहां पुलिस आतंकित नहीं करती सहयोगी प्रतीत होती है। लम्बी दूरी की यात्रा में थोड़े-थोड़े अंतराल में गैस-स्टेशन अर्थात् पैट्रोल पंप और विश्राम गृह बने होते हैं जहां नाश्ते और शीतल पेय के साथ आवश्यक सुविधाएं भी होती हैं।

वहां प्राय: घर इतने बड़े होते हैं कि सिवाय बच्चों की आवाजों के इंसानों के होने का पता ही नहीं चलता। एक प्रकार से भारत के वातावरण से बिल्कुल उलट-चुप्पियां ही चुप्पियां।

यहां की कार्य-संस्कृति और श्रम का वातावरण ही अलग है। साल में बहुत कम छुट्टियां, पांच दिन का कड़ा श्रम और सप्ताहान्त का भरपूर आनन्द। यहां शादी-ब्याह के मुहूर्त पोथी और सावों से नहीं, बल्कि शनिवार, रविवार के हिसाब से रखे जाते हैं। जन्म दिन और दूसरी पार्टीज भी सप्ताहान्त में तय होती हैं। राष्ट्रीय अवकाश सप्ताहान्त में ही जोड़ दिये जाते हैं, अत: प्राय: लोग यहां इन तीन चार दिनों के अवकाश में घर से बाहर जाने का कार्यक्रम बना लेते हैं। चार-पांच या ८-१० घंटे की लम्बी ड्राईव से ये लोग घबराते नहीं है। गर्मियों में ये लोग निकटवर्ती स्विमिंग पूल, नदी, झीलों या सागर तट पर जाना पसंद करते हैं। घंटों पानी में नहाना और मनोरंजन करना इनका प्रिय शगल है। यहां बात बात

में फोटो खींचने का शौक दीवानगी की हद तक है।

इस देश में भारतीयों की प्रतिभा निखर कर सामने आयी है, चाहे स्कूल, कॉलेज हों या व्यवसाय। यहां के भारतीय भारत के इतिहास, राजनीति और अन्य घटनाक्रमों के प्रति सजग होते हैं। एक ओर यहां की प्रतिभाएं यदि यहां के प्रशासन में अपनी जगह बना रही हैं तो दूसरी ओर यहां के अखबारों में गांधी, सुभाष, नेहरू आदि के बारे में लेख छपते हैं। मीडिया, टी.वी. चैनल्स और हिन्दी फिल्मों के प्रति तो एक अलग ही क्रेज है।

अन्तर्राष्ट्रीय सूचनाओं के प्रति भी यहां सजगता है। विशेष रूप से एशियाई देशों की घटनाएं अनेक अखबारों में प्रकाशित होती हैं। **इंडिया एब्रॉड** एक ऐसा ही समाचार पत्र है- जो न केवल भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक सूचनाओं को प्राथमिकता देता है, बल्कि अमेरिका में रहने वाले प्रवासी भारतीयों की सक्रिय भागीदारी को भी प्रमुखता से रेखांकित करता है।

भारत की सरकारी अक्षय पात्र योजना के जिसमें गरीब बच्चों को शिक्षा के साथ भोजन देने की व्यवस्था है, यहां के लोगों को बहुत प्रभावित किया है। बहुत से लोगों ने उसमें अपना योगदान देना चाहा है, विशेष रूप से प्रवासी भारतीय किशोरों ने। यहां के युवाओं में सोशल वर्क करने का एक विशेष आकर्षण है। समृद्ध माता-पिता के युवा बच्चे भारत में कुछ समय रहकर वहां कोई प्रोजेक्ट लेना चाहते हैं-चाहे वह भारत के बच्चों से संबंधित हो, महिलाओं से संबंधित हो या ग्रामीण विकास आदि से। भारत में भी इस जज्बे की आवश्यकता है। भौतिकवादी खोखले कार्यों से हमें सचेत होना ही होगा।

विश्व की एक सशक्त महिला पेप्सिको की सी.ई.ओ. **इन्दिरा नूयी** ने तमाम व्यवस्तताओं के बीच बोस्टन के एक समारोह में कहा जब हम संसार में किसी को भोजन देने का संकल्प करते हैं, तब हम सचमुच ईश्वर का ही दिया हुआ कार्य कर रहे होते हैं। अक्षय पात्र योजना वह विचार है जो एक स्कूल वर्ष में एक मिलियन बच्चों को प्रतिदिन शिक्षा के साथ भोजन की व्यवस्था करता है। क्योंकि हम जानते हैं कि बच्चों की ऊर्जा रुद्ध हो जाती है जब वे भूखे और गरीब होते हैं, साथ ही तब वे शिक्षा भी ग्रहण नहीं कर पाते। क्योंकि हम जानते हैं कि जब एक बच्चा अच्छी तरह पोषित और पल्लवित होता है, शिक्षित और विकसित होता है, तब हमारा बच्चा स्वयं अक्षय पात्र बन जाता है-सफलता, आशा और ऊर्जा का अक्षय पात्र।

यहां अक्षयपात्र के लिए न केवल फंड इकट्ठा किया जा रहा है, उसके प्रति एक सकारात्मक रुझान भी बन रहा है। सिलिकन वैली की ११ वर्षीय **अंजलि** ने पढ़ा था कि इस योजना के अन्तर्गत १.३ मिलियन बच्चे प्रतिदिन लगभग ८००० स्कूलों में, १८ रसोइयों से भारत के ८ राज्यों में भोजन प्राप्त करते हैं। वह अपने पिता के साथ बैंगलोर के एक मंदिर में चल रहे इस अभियान को देखने गयी। उसने देखा एक हाई टैक किचन में न केवल भोजन तैयार

होता है बल्कि ट्रकों में भरकर वितरण के लिये जाता है। उसने महसूस किया कि कितने बच्चे संपन्न घरों में भोजन पाते हैं और कितने बच्चे कुपोषण के शिकार होते हैं। जब मैं सोचती हूं कि लाखों बच्चों के पास खाने को भोजन नहीं है तो मैं उनके लिये कुछ करना चाहती हूं।

उसने अपनी वर्षगांठ पर सबसे कहा कि मुझे कोई उपहार नहीं चाहिये। उसे उपहारों के बदले ३०० डालर मिले जो उसने अक्षय पात्र को दे दिये। वह प्रवासी भारतीयों को प्रेरित करना चाहती है कि वे इस संगठन की सहायता करें। वह गर्मियों की छुट्टियों में भारत की अक्षय पात्र रसोइयों में कुछ समय व्यतीत करना चाहती है। उसका मानना है कि बच्चे बहुत कुछ कर सकते हैं और वे दूसरे बच्चों और बड़ों को भी प्रेरित कर सकते हैं।

एक हाई स्कूल की छात्रा १६ वर्षीय **मीरा भान** ने ४४० मेहमानों को एक संदेश देते हुए कहा- हम संसार की एक तिहाई गरीबी को दूर कर सकते है। उसने अक्षय पात्र के लिए एक पत्र अभियान द्वारा लगभग ८००० डालर का फंड एकत्र किया। उसने कहा कि १४ डालर बहुत छोटी राशि है जिससे हम रेस्ट्रां में डिनर खा सकते हैं या डीवीडी खरीद सकते हैं या फिर एक किताब किन्तु अक्षय पात्र योजना की प्रेरक टैक्नोलॉजी से यह रकम एक बच्चे को रोज भोजन दे सकती है। अत: कृपया सहायता करें। उसने आगे कहा-यह योजना बच्चों को स्कूल से बांधती है, साथ ही भूख को हरा कर शिक्षा ग्रहण करने में मदद करती है। मैंने दो वर्ष पहले किसी पत्रिका में इसके बारे में पढ़ा था-जब मैं भारत से सम्बद्ध किसी संस्था में स्वैच्छिक सेवा कार्य करने की इच्छुक थी।

यह अमेरिकन भारतीयों की युवा पीढ़ी का, गरीबी दूर करने के संकल्प का एक उदाहरण भी है। उसने एक संक्षिप्त पत्र

तैयार किया–क्या तुमने कभी कोई भोजन जूठा छोड़ा है अथवा क्या ऐसा समय आया है जब तुम बेहद भूखे हो और तुम्हारे पास खाने को कुछ न हो–क्या तुमने एक दिन भी इस बात का अहसास किया है ? तुम भूखे हो और काम के लिये संघर्ष कर रहे हो, किन्तु भारत में जरूरतमंद बच्चों की यह रोज की चिन्ता है, जो कम से कम इस योजना से एक समय का भोजन तो प्राप्त कर ही सकते है। उन मासूमों को तुरन्त सहायता की आवश्यकता है। उसने अपने मित्रों से कहा–इस संगठन ने मुझे मेरे माता–पिता की भूमि से जोड़ा है, उन बच्चों की सहायता के लिये, जो उसी विरासत और संस्कृति के भागीदार हैं। मैं डॉक्टर बनना चाहती हूं और ऐसे जरूरतमंदों की मदद करना चाहती हूं।

इंडिया एब्रॉड यूएस न्यूज मई, १७, २०११ से साभार शिक्षा के लिये रोचकता और प्रतियोगिता दोनों ही अनिवार्य है। शिक्षा चाहे कला की हो, वाणिज्य की हो या विज्ञान की, प्रभावी अभिव्यक्ति के लिये एक सुन्दर, शुद्ध समृद्ध भाषा की आवश्यकता है। लेखनी, वर्तनी और उच्चारण की शुद्धता के लिये प्रतियोगिता के रूप में बच्चों को स्कूल स्तर पर ही तैयार करना एक सुदृढ़ आधार बनाता है। अमेरिका में राष्ट्रीय स्तर की बच्चों के लिये एक प्रतियोगिता होती है – **नेशनल स्पैलिंग बी,** इस में प्राय: भारतीय बच्चों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण उल्लेखनीय हैं–

लगातार चतुर्थ वर्ष में एक भारतीय अमेरिकन आठवीं कक्षा की छात्रा **१४ वर्षीय सुकन्या रॉय** ने वाशिंगटन डी.सी. में २ जून, २०११ को इस प्रतियोगिता में विजेता का ताज पहना। पेन्सिलवेनिया की निवासी **सुकन्या** ने अन्य बारह प्रतियोगियों को पीछे छोड़ते हुए न केवल ट्रॉफी जीती, बल्कि ३०,००० डॉलर का नकद इनाम भी जीता, इसके साथ ही २५०० डॉलर के यूनाइटेड स्टेटस सेविंग्स ब्रोंड्स भी प्राप्त किये।

१९९९ में जब से एक एनआरआई छात्रा **नुपूर** ने इस ताज पर कब्जा किया है, तब से १२ प्रतियोगिताओं में से ८ पर भारतीयों ने ही विजय प्राप्त की है।

२००८ में इंडियाना निवासी १३ वर्षीय समीर मिश्रा ने 'नेशनल स्पैलिंग बी' प्रतियोगिता जीती। समीर का कहना है कि भारतीय अमेरिकन बच्चों की जीत के पीछे परिवार के सहयोग का बहुत बड़ा हाथ है। मेरा सारा परिवार डिनर–टेबल पर 'स्पैलिंग्स' का अभ्यास कराता था और हम बहुत से संदर्भों के बारे में विचार विमर्श करते थे कि हमें क्या पढ़ना चाहिये।

२००९ की विजेता **काव्या शिवशंकर** का मानना है कि हमें यह ज्ञात होना चाहिये कि हमें क्या चाहिये, जिसे पाने के लिये एक लम्बा अभ्यास और समर्पण चाहिये। साथ ही समय और प्रयत्न – भी कुछ भी आसानी से नहीं मिलता।

२०१० की विजेता अनामिका विरमानी का कहना है कि परिवार का सहयोग बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। परिवार वालों ने मुझे इस प्रतियोगिता पर केन्द्रित किया और अन्य गतिविधियों के विषय में भी बताया। पूर्व चैम्पियन्स के बुद्धिमतापूर्ण परामर्शों से भी मुझे बहुत लाभ हुआ। इंडिया एब्रोड जून–१०, २०११ से साभार ये कुछ उदाहरण हैं जो हमें युवा शक्ति और सोच के प्रति आश्वस्त करते हैं। परिवर्तन तो समय की मांग है किन्तु उससे भी अधिक आवश्यकता है एक सकारात्मक दिशा–निर्देश की, एक सही वातावरण निर्माण की। **शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण के अनेक पहलुओं को समेटती है परन्तु शिक्षा के साथ सामाजिक सरोकार और मूल्यों के संरक्षण के प्रति सजगता आती है तो व्यक्तित्व की इमारत अधिक पुख्ता हो सकती है।** ❑

बी–१०७/१०४, कदम्ब अपार्टमेंट्स, उदय मार्ग,
तिलक नगर, जयपुर–३०२००४

Anopcharika_Sept_Oct_2012 Page 25

कुंज विद्यापीठ

❑

धनंजय राय

गांव से अगाध लगाव तथा सर्वोदय दर्शन से प्रेरित होकर प्राख्यात सामाजिक कार्यकर्ता तथा अपने मार्गदर्शक गुरु दिल्ली निवासी श्री अजयसहाय जी से अभिप्रेरित एवं दिग्दर्शित होते हुए मैं दिल्ली से नौकरी छोड़ वर्ष २००६ में **ग्राम-स्वराज** के कार्य हेतु, अपने पैतृक गांव **'हथौंज'** आ गया। **हथौंज** गांव उत्तर प्रदेश के **बलिया** जनपद के **मनियर प्रखंड** में स्थित है। गांव आने के बाद मेरे सामने सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न था कि काम कहां से शुरू किया जाये। इसके लिए मैं स्वाध्याय के साथ-साथ जनपद तथा बाहरी संस्थाओं का भ्रमण कर सामाजिक कार्यकर्ता तथा चिंतकों के साथ कुछ सीखता रहा।

कई प्रकार के कार्यों एवं प्रयासों को देखने समझने के बाद विचार आया कि वर्तमान समय की समसामयिक विकराल चुनौतियों से लड़ने के लिए शिक्षा सबसे बेहतर विकल्प है। शिक्षा का रास्ता वो विकल्प है जो एक निश्चित समय-सीमा के अन्दर निश्चित परिणाम दे सकता है। शैक्षिक कार्यों को शुरू करने के निश्चय के साथ एक प्रश्न यह भी आया कि शिक्षा कैसी होनी चाहिए अर्थात् शिक्षा का स्वरूप कैसा होना चाहिए ? इस प्रश्न के उत्तर में शिक्षा के सम्बन्ध में गांधी जी द्वारा दी गयी परिभाषा ने हम लोगों को सुव्यवस्थित, सुसंगठित तथा क्रमबद्ध मार्गदर्शन दिया। परिभाषा थी **'शिक्षा से हमारा तात्पर्य मनुष्य के मन, शरीर तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तकृष्ट विकास से है।'** इस परिभाषा को आधार मानकर मन में सकारात्मक एवं स्वस्थ संवेगों को प्रोत्साहन देने, शरीर को आरोग्यवान, स्वावलंबी, बनाने के साथ-साथ स्वस्थ पारिवेशिक संतुलन स्थापित करने में व्यक्ति को सामर्थ्यवान बनाने के लिए तथा आत्मा की शुद्धता में निरन्तर क्रमिक सकारात्मक आरोह के लिए हम लोगों ने १६ जून, २००९ को ग्राम सभा हथौंज में एक विद्यालय की स्थापना की, जिसे **'ग्राम कुंज विद्यापीठ'** की संज्ञा दी गयी। सूत्र वाक्य बना **'विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्'**। परिवेश में अवस्थित समस्त प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जैविक-अजैविक प्राकृतिक घटकों में परस्परता, पूरकता के विज्ञान को समझते-समझाते हुए समस्त घटकों के सावयवी एकता को बरकरार रखना तथा एक घटक के रूप में स्वयं की भूमिका को ठीक-ठीक तय करने के उपरान्त उसके सतत निर्वहन की दिशा में कार्य करना प्रमुख उद्देश्य बना। आधुनिक शिक्षा प्रणाली से अक्षर ज्ञान संबंधी मदद ली गयी। भाषायी रूढ़िता से परे भाषा की पवित्रता को समझते हुए तथा समकालीन महत्त्व को देखते हुए अंग्रेजी से परहेज संभव नहीं हो सकता। विषयों में गहराई तक जाने के लिए तथा उसके वैश्विक एवं सार्वभौम प्रासंगिकता को समझने के लिए अंग्रेजी इसलिए नितान्त आवश्यक जान पड़ती है कि वर्तमान में लगातार सारे सुदृढ़ अभिलेख एवं प्रतिवेदन अंग्रेजी में ही उपलब्ध हो पाते हैं। अंग्रेजी की मदद जरूर ली गयी है, बहरहाल अपनी मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के प्रति आस्था कम नहीं हुई है। अधिकांश व्यक्तिगत एवं संस्थागत कार्यों में राष्ट्रभाषा का ही प्रयोग किया जाता है। वैसे तो **ग्राम कुंज विद्यापीठ** की शिक्षा व्यवस्था में प्रचलित शिक्षा, व्यवस्था का समावेश है, लेकिन उसके साथ ही बहुत कुछ अलग से जोड़ने का प्रयास किया गया है। शायद इसीलिए अनेक शैक्षिक प्रयासों के भीड़ में यह कुछ विशिष्ट पहचान लिए हुए समाज को सकारात्मक दिशा देने का कार्य कर रहा है।

एक अनुसंधान केन्द्र

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बहुत सारे ऐसे साधनों का प्रयोग किया जा रहा है, जिनका साध्य, भोगवाद, बाजारवाद, स्वार्थपरकता, परावलंबन इत्यादि जैसे अनेक सामाजिक एवं व्यक्तिगत अवगुणों को प्रोत्साहित करना है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की खामियों को दूर करने के लिए वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली की खोज विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के सहयोग से की जा रही है।

किसी समस्या पर हो-हल्ला मचाने से बेहतर है कि उस समस्या को दूर करने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था का निर्माण किया जाये। इस संदर्भ में चिंतन मनन एवं अनुसंधान निरंतर जारी है।

लोक शिक्षक

पढ़े लिखे प्रशिक्षित लोगों के साथ-साथ निरक्षर लेकिन कुशल एवं निपुण ग्रामीण लोग शिक्षक के रूप में कार्य करते हैं। कुशल लोक शिक्षक वो ग्रामीण निपुण तथा वरिष्ठ लोग है जो आम जन जीवन में स्थानीय संसाधनों का इस प्रकार प्रयोग करते हैं कि प्राकृतिक परस्परता एवं पूरकता को संबल मिले। लोक शिक्षक स्थानीय संसाधनों से घरेलू उपयोगी की वस्तुओं का निर्माण करने में अत्यन्त माहिर है। इनके द्वारा बनायी गयी वस्तुएं पर्यावरणीय दृष्टि से संतुलित है। लोक शिक्षक क्षेत्रीय कलाओं में अत्यन्त कुशल हैं। इस समय **विद्यापीठ** से ०७ लोक शिक्षक जुड़े हुए हैं। लोक शिक्षकों के माध्यम से यह भी जानकारी मिलती है कि किसी विशेष समस्या के निवारण के लिए किस प्रकार के स्थानीय तौर-तरीकों का प्रयोग हो सकता है। लोक शिक्षकों के माध्यम से अपने पूर्वजों द्वारा किये गये प्रयासों की जानकारी मिलती है, जो विविधता के अस्तित्व को बरकरार रखते हुए एकता स्थापित करने में सफल रहे हैं। लोक शिक्षक हम लोगों को सुन्दर, स्वावलम्बी एवं सतत व्यवस्था संबंधी मार्ग को प्रशस्त कर रहे हैं।

स्वावलंबी प्रशिक्षण केन्द्र

विद्यालयी कार्यों के अलावा यह केन्द्र, स्वावलंबन के तौर-तरीकों पर विशेष अनुसंधान एवं कार्य करता है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल से आम जन जीवन में प्रयोग होने वाली अनेक वस्तुओं का निर्माण करना भी सिखाया जाता है। जैसे- खाद्य, पदार्थों में अचार, जेम, जेली, मुरब्बा, स्क्वैश, अदौरी, फ्रूटी इत्यादि। इन्हें बनाने में पूर्ण रूप से स्थानीय ग्रामीण कला तथा जैविक विधियों का प्रयोग किया जाता है। लोक शिक्षक अन्य जरूरत की चीजें जैसे-डलिया, मौनी, पशुओं के लिए पटसन की रस्सी, जाबी, स्वैटर इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ जैविक खेती, पशुपालन आदि के बारे में भी बताते हैं ताकि आम जीवन में परावलम्बन समाप्त कर स्वावलम्बन एवं स्वाभिमान का भाव पैदा हो तथा बाजारवाद की दासता से मुक्ति मिले। इससे पर्यावरणीय असंतुलन को कम करके पारिवेशिक स्वस्थता को बढ़ाया जा सकता है। समय-समय पर लगने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विद्यालयी छात्रों के अलावा आस-पास के गांवों के युवक एवं युवतियां भी भाग लेते हैं।

जिज्ञासा एक पुस्तकालयाध्यक्ष

वर्तमान बाजार में भोगवाद, बाजारवाद, स्वार्थवाद तथा पूंजीवाद को बढ़ावा देने वाले साहित्यों को प्रचुर मात्रा में उपलब्धता तथा सद्साहित्यों की अल्पता ने एक नये तरीके की वैचारिक समस्या को खड़ा कर दिया है। उपलब्ध साहित्य व्यक्ति को भोगवादी तथा निजवादी बना रहे हैं। परिणामस्वरूप समाज, परिवार, पड़ोस इत्यादि जैसी अनेक सतत तथा स्वावलम्बी संस्थाओं का अत्यन्त तेजी से पतन हो रहा है। समाज को सकारात्मक दिशा देने तथा एक सतत, सुव्यवस्थित व्यवस्था को बनाने में सद्साहित्यों के महत्व को देखते हुए विद्यालय परिसर में **'जिज्ञासा'** नाम से एक पुस्तकालय चलाया जाता है। आस पास के ग्रामीण तथा विद्यार्थी इस पुस्तकालय का भरपूर लाभ लेते हुए वैचारिक रूप से सबल हो रहे हैं। पुस्तकालय में लगभग २५०० सद्साहित्य, १३ मासिक पत्रिकाएं तथा एक दैनिक समाचार पत्र भी आता है। सद्साहित्यों में बढ़ोतरी निरन्तर जारी है।

शिक्षक-अभिभावक संगत

हर माह की अंतिम तारीख को विद्यालय परिसर में अभिभावकों तथा शिक्षकों की संगत होती है। इस संगत के माध्यम से अभिभावक भी छात्र छात्राओं के सकारात्मक व्यक्तित्व विकास तथा सद्विचार संचार के लिए सलाह देते हैं तथा कार्यक्रम नियोजन में सहभागी बनते हुए उसका सफल क्रियान्वयन करते हैं। इस संगत के माध्यम से अन्य क्षेत्रीय समस्याओं के

समाधान पर भी विचार विमर्श किया जाता है तथा यथा संभव कार्यों को तय करके मूर्त रूप भी दिया जाता है।

विशेष प्रशिक्षण शिविर एवं गोष्ठी

समय-समय पर राष्ट्रीय मुद्दों तथा क्षेत्रीय समसामयिक समस्याओं को दूर करने तथा वर्तमान अच्छाइयों को सबल एवं सुदृढ़ करने हेतु लघु अवधि के प्रशिक्षण शिविर तथा गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। शिविर एवं गोष्ठियों के माध्यम से विचारों को संगठित, सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध कर वर्तमान प्रासंगिकता के अनुसार कार्य योजनाएं तैयार की जाती हैं तथा उसे साकार स्वरूप भी दिया जाता है। विगत तीन वर्षों में शिविर एवं गोष्ठियों में मार्गदर्शन देने हेतु श्री अमरनाथ भाई, प्रख्यात सर्वोदयी एवं गांधीवादी कार्यकर्ता, डॉ. सच्चिदानन्द, प्राकृतिक चिकित्स, डॉ. राजेन्द्रसिंह, जल पुरुष एवं मैग्सासे विजेता श्री राम धीरज प्रकाशक, सर्व सेवा संघ प्रकाश, श्री अविनाश चन्द्र पूर्व प्रकाशक, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, डॉ. सुगन बरन, पूर्व अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ, श्री अशोक भारत, संयोजक, युवा भारत, श्री राजधार पूर्व वन्य एवं जीव मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, श्री पी.एस. ओझा प्रान्तीय समन्वयक, बॉयो एनर्जी मिशन उत्तर प्रदेश प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में पधार चुके हैं। साथ ही क्षेत्रीय प्रबुद्ध व्यक्ति, कुशल किसान, कुशल कारीगर, विद्यालयों-महाविद्यालयों के प्रवक्ता एवं प्राचार्य भी समय-समय पर अपना महत्त्वपूर्ण समय विद्यापीठ परिवार को देते हैं।

स्थानीय शैक्षिक सहायक सामग्रियों का निर्माण एवं प्रयोग

बालक के उचित अधिगम के लिए अनेक शैक्षिक सहायक सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है। जैसे-ब्लैक बोर्ड, डस्टर, चाक, चार्ट, खिलौने, अक्षर, अंक इत्यादि। वर्तमान में इन संशोधनों की पूर्ति बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कर रही है। कम्पनियों द्वारा आपूर्त ये संशोधन आकर्षक तो होते हैं लेकिन महंगा होने के साथ-साथ ऐसे पदार्थों से बनाये जाते हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल नहीं है। शायद इसीलिए शिक्षा दिन ब दिन महंगी भी होती जा रही है। पर्यावरणीय संतुलन को बरकरार रखने के लिए तथा शिक्षा को आम आदमी से जोड़ने के लिये ग्राम कुंज विद्यापीठ में शिक्षकों, अभिभावकों तथा स्थानीय कामगारों, लोहार, बढ़ई, राजगीर इत्यादि की मदद से सहायक शैक्षिक सामग्रियों का निर्माण किया जाता है। ये सामग्रियां स्थानीय उपलब्ध संसाधनों से ही बनायी जाती है। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि ये उपलब्ध संसाधन पर्यावरण के अनुकूल हो। इस प्रयोग में विद्यार्थी स्वयं सहभागी होते हैं जिसके कारण उनमें एक विशेष सकारात्मक अन्वेषी एवं करके सीखने वाली प्रवृत्ति का निर्माण होता है। इससे रचनात्मकता को विशेष बल मिलता है।

शैक्षिक भ्रमण

विद्यालयी छात्र-छात्रा को वर्ष में दो बार स्थानीय शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया जाता है। जिससे विद्यार्थियों में भौगोलिक, प्राकृतिक एवं सामाजिक समझ का विकास हो। इससे संबंधित खर्च स्थानीय लोगों की मदद से किया जाता है। बलिया में लोक नायक जय प्रकाश नारायण की जन्म स्थली, महान साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी की जन्म स्थली तथा पड़ोसी जनपद सीवान में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जन्म स्थली है। समय-समय पर ऐसे स्थलों का भी भ्रमण किया जाता है। इस भ्रमण से विद्यार्थी वर्तमान समस्याओं से लड़ने के लिये दिये गये इन महापुरुषों के वैकल्पिक व्यवस्था से अवगत होते हैं।

आडम्बरों से दूर वास्तविक तथ्यों पर ध्यान देते हुए **ग्राम कुंज विद्यापीठ** में वर्तमान में ३०७ छात्र-छात्राएं शैक्षिक लाभ ले रहे हैं। मेरे अलावा **ग्राम कुंज विद्यापीठ** में निम्न व्यक्ति अपना विशेष योगदान दे रहे हैं - उदयनारायण यादव, प्रमुख अभिभावक एवं संरक्षक, मनोज कुमार उपाध्याय, दीपक कुमार उपाध्याय, पंकज कुमार भारती, रवि शंकर तिवारी, रामकुमार चौहान, शैलेन्द्र कुमार दुबे, राजीव प्रसाद सरदार, कु. आकृति राय, कु. सरिता गुप्ता, मो. मोबीन। पूर्ण रूप से प्राकृतिक परिवेश में अवस्थित विद्यापीठ परिसर का क्षेत्रफल लगभग ५०० वर्ग मीटर है। ❑

ग्राम व पो. -हाथींज
जिला-बलिया, उत्तरप्रदेश-२७७३०२

सार्थक जीवन के सौ वर्ष

प्रो. रमाशंकर जैतली राजस्थान विश्व विद्यालय में संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहे हैं। वे ममता जैतली के पिता हैं। ममता जी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में महिला विकास के राज्य इदारा की समन्वयक रही हैं। सभी मित्रों के साथ उनकी आत्मीयता के कारण प्रो. जैतली हम सब के भी पापा हैं। पिछले दिनों उन्होंने जीवन के सौंवे साल में प्रवेश किया। एक छोटा सा अत्यन्त आत्मीय समारोह ममता के घर पर आयोजित था। यहां प्रस्तुत है उनकी अपनी कलम से उनका संक्षिप्त परिचय और उस आयोजन की कुछ तस्वीरें। ❑ सं.

आठ वर्ष की अवस्था में मैं संस्कृत अध्ययन के लिए काशी के अन्नपूर्णा मंदिर द्वारा संचालित ऋषिकुल भेज दिया गया। १० वर्ष वहां रहा। इतने समय में मैंने प्रथमा और मध्यमां के चारों खंड प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर लिए। संस्कृत में बोलने और लिखने की अच्छी शक्ति आ गई थी।

इसके बाद अपने घर लखनऊ आ गया। वहां लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या विभाग में प्रवेश लिया। यह मेरा सौभाग्य था जो मैं विद्वद्वरेण्य श्री घूटर झा का कृपा पात्र पट्ट शिष्य हुआ। उनकी कृपा से ही मैं व्याकरण शास्त्री शांकर वेदांत शास्त्री, साहित्याचार्य और काव्यतीर्थ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। झा साहब अवकाश पर एक मास के लिए अपने घर दरभंगा गए। संस्कृत, हिन्दी, पालि और प्राकृत के अध्यक्ष प्रोफेसर ऐयर ने सन् १९३५ में उक्त विश्वविद्यालय में मेरी नियुक्ति कर दी।

इसके बाद मैं अलीगढ़ में आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पोस्ट ग्रेजुएट धर्म समाज कॉलेज में पहले हिन्दी विभाग और बाद में संस्कृत विभाग का अध्यक्ष नियुक्त हुआ। अब तक मैं हिन्दी संस्कृत दोनों में एम.ए. कर चुका था। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा दिए 'शृंगार रस: भावना और विश्लेषण' विषय पर पीएच.डी. भी कर ली।

इन्हीं दिनों भारत सरकार ने 'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दावली आयोग की स्थापना की। भाषा–विशेषज्ञ के रूप में इसका मैं सदस्य था।

सन् १९६२ में संस्कृत विभाग में राजस्थान विश्वविद्यालय में मेरी नियुक्ति हुई। इस विभाग के अध्यक्ष के रूप में सन् ७६ में मैं सेवा निवृत्त हुआ। इसके बाद लंदन यूनिवर्सिटी के वृंदावन में

चल रहे रिसर्च प्रोजेक्ट में दो वर्ष के लिए डायरेक्टर के रूप में कार्य किया।

मेरा काव्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र तथा विभिन्न कलाओं का प्रशस्त अध्ययन रहा है। इन विषयों पर मेरे लेख संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी से विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। दिल्ली, उदयपुर, उज्जैन और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आमंत्रण पर ऐसे ही विषयों पर मैंने पत्रवाचन भी किया।

मेरा शोधप्रबंध 'शृंगार रस: भावना और विश्लेषण' हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर से प्रकाशित हो चुका है। दूसरा ग्रंथ 'काव्यशास्त्र एवं कलाशास्त्र' राजस्थान संस्कृत अकादमी से प्रकाशित हुआ है। ये लेख अपने प्रामणिक विवेचन के कारण महत्वपूर्ण हैं।

वर्ष २००२ में मुझे राजस्थान संस्कृत अकादमी के राज्य स्तरीय सम्मान 'पंडित जगदीश शर्मा साहित्य मनीषी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। ❑

उत्तरप्रदेश की चिट्ठी

शाला खाली शिक्षक खाली

❑

जिले में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सरकारी एवं सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थानों में छात्रों की संख्या घटती जा रही है। कई विद्यालयों में छात्रों की संख्या काफी घट चुकी है। जिससे दर्जनों अध्यापक बैठे–बैठे वेतन ले रहे हैं।

जिले में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति काफी खराब है। राजनैतिक दखलंदाजी के कारण शहर से सटे तीन विकास खंडों पूरा बाजार, मसोधा और सोहावल में मंजूर पद से डेढ़ गुना अध्यापक है। इनमें महिलाएं ज्यादा हैं, जो शहर से विद्यालय आती जाती हैं। सरकार ने बीटीसी के जरिए जिन अध्यापकों का चयन कर नियुक्ति की है उनके बारे में शिकायतों का पुलिंदा विभाग को मिल रहा है। कई अध्यापक विद्यालय जाते ही नहीं और घर बैठे वेतन ले रहे हैं।

सरकार की ओर से मुफ्त पुस्तकें, वर्दियां और मध्याह्न भोजन मिलने के बावजूद छात्रों की संख्या गिरती जा रही है। गांवों के लोग शहरों में बच्चों को भेज कर शिक्षा दिला रहे हैं। प्राथमिक विद्यालयों में फर्जी दाखिले कर अध्यापक अपनी नौकरी सुरक्षित कर रहे हैं। पूरे राज्य में संबद्धीकरण बंद है। सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी बीकापुर ने २२ अध्यापकों को अपने दफ्तर में संबद्ध कर रखा था । शिकायत पर उनका तबादला अमेठी जनपद कर दिया गया है। बीएसए दफ्तर पर रोज शिक्षकों और उनके परिजनों की भीड़ लगी रहती है।

विधायक तेज नारायण पांडेय ने बीएसए से ऐसे अध्यापकों को चिह्नित करने को कहा है, जो राजनैतिक दलों का चुनावों में प्रचार करते हैऔर स्कूल नहीं जाते हैं। गोसाईगंज के विधायक अभय सिंह ने दर्जनों ऐसे अध्यापकों की पहचान की है, जो बसपा का खुले आम प्रचार कर रहे थे। ऐसे कई अध्यापक निलंबित भी हो चुके है। संगठन बना कर नेतागीरी कर रहे शिक्षकों का तबादला भी प्रशासन के लिए समस्या बन गया है।

कुछ अध्यापक ढाबा चला रहे हैं तो कई ठेकेदारी करते हैं। कई अध्यापिकाएं अफसरों की बीवियां हैं, जो कभी विद्यालय जाती नहीं है और वेतन ले रही है। कई अध्यापिकाओं की शिकायत है कि वे स्कूल में हमेशा मोबाइल फोन पर बात करती रहती है और छात्र घूमते रहते हैं।

माध्यमिक शिक्षा की हालत भी खराब है। हाई स्कूलों में छात्रों की संख्या घट गयी है। जीआईसी फैजाबाद में प्रवक्ता के कई पद खाली है नतीजन छात्राएं प्राइवेट विद्यालयों में दाखिले ले रही हैं। सहायता प्राप्त विद्यालय में दो चार को छोड़ कर हर जगह छात्रों की संख्या घटने से अध्यापक खाली बैठे हैं। पढ़ाने के अलावा हर धंधा कर रहे हैं। ये अध्यापक खुले आम दिन भर घूम रहे हैं। कई तो रोज शिक्षा भवन में दलाली का काम कर रहे हैं।

जिले के मुन्ना लाल यादव लाल हायर सैकेंडरी स्कूल में छात्रों की संख्या और अध्यापकों की संख्या बराबर है। शिक्षक फालतू बैठे राजनीति कर रहे हैं। कई तो शिक्षा विभाग के अफसरों की गाड़ियों में उनकी डायरी और फाइल लेकर चल रहे हैं। मनोहर लाल इंटर कॉलेज, बच्चू लाल इंटर कॉलेज पूरा, रामबली नेशनल इंटर कॉलेज में छात्रों की संख्या घट जाने से अध्यापक बेकार बैठे हैं। रामबली नेशनल इंटर कॉलेज के कई अध्यापक कोचिंग चला रहे हैं।

राजकीय महाविद्यालय में लगभग सौ छात्र हैं जबकि अध्यापकों की संख्या आठ है। इसी तरह साकेत महाविद्यालय में स्नातक स्तर की सीटें नहीं भर पा रही हैं। कई प्राध्यापकों को अब कोई काम ही नहीं रह गया है। शिक्षा में गिरावट का हाल यह है कि छात्र अच्छे नंबर से पास होने के लिए नकल के लिए कुख्यात कॉलेजों में दाखिले ले रहे हैं। ऐसे महाविद्यालयों में न योग्य प्राध्यापक हैं न छात्रों को पढ़ने के लिये महाविद्यालय पहुंचने की जरूरत है। ❑

फिरकी की साज सज्जा अखिलेश्वर आर्य की है और चित्रांकन जोएल गिल एवं अतनु राय का है। फिरकी की कार्यकारी संपादक हैं उषा शर्मा एवं मीनाक्षी खार। फिरकी को निम्नलिखित पते पर पत्र लिखकर मंगाया जा सकता है –

संपादक,
फिरकी,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद,
श्री अरविन्द मार्ग
नयी दिल्ली–११००१६

फिरकी का नया अंक आ गया है। तारीख की दृष्टि से इसे नया नहीं कहा जायेगा। आया अभी पिछले दिनों ही है इसलिये नया तो है ही। फिरकी की विशेषता यह है कि एन.सी.ई. आर.टी द्वारा इसे मुफ्त वितरण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। पाठक जानते हैं कि यह पत्रिका बाल–साहित्य की एक नायाब पत्रिका है जिसे विद्यालय, अध्यापक एवं अभिभावक लोग पत्र लिखकर मुफ्त में मंगा सकते हैं।

फिरकी के इस अंक में टोपी वाले और बंदरों की कहानी को अच्छे रेखांकन में पुनः प्रस्तुत किया गया है। छोटे बच्चों की रचनाएं भी हैं और बालकों द्वारा रेखांकित रचनाएं भी इसमें है। मथुरा के बालक अमित कुमार की दो पृष्ठ में फैली पेंटिंग भी है और हेमा रानी गांव–नगलाचमारान द्वारा चित्रित हाथी और खरगोश की कहानी भी है।